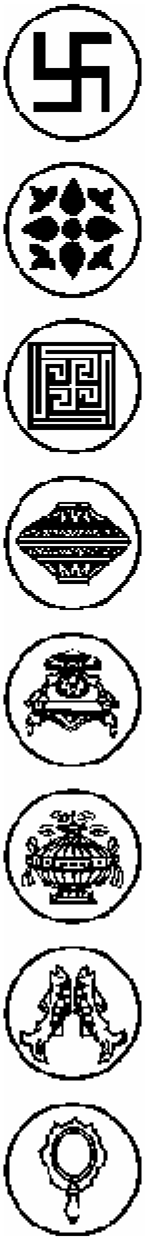

जैन संस्कार

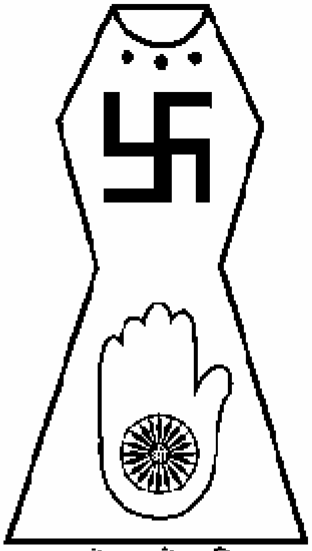

परस्परोपग्रहो जीवनाम्

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

१. जैन जीवन शैली ६
२. प्राक्कथन ७
३. जैन संस्कार विधि : संविधान सम्मत १४
४. मंगल भावना पत्रक : विश्लेषण १६
५. श्रावक समाज को संबोधन-श्री आचार्य तुलसी २२(अ)
६. दीपावली पर्व २३
७. नामकरण संस्कार ३१
८. विवाह संस्कार ३४
९. गह प्रवेश संस्कार ४४
१०. जन्म दिवस संस्कार ४७
११. शिलान्यास संस्कार ४९
१२. उद्घाटन संस्कार ५१
१३. अंक (गोद) आपूर्ति संस्कार ५३
१४. यात्रा प्रस्थान ५६
१५. अन्तिम संस्कार ५७
१६. स्मति संवेदना ६१

परिशिष्ट : १

१. नामकरण (सहयोगी सामग्री) ६६

परिशिष्ट : २

१. मांगलिक दिवस (अपूछ सावा) ७०

परिशिष्ट : ३

१. मंगल गीत श्रीमती कमला भादानी ७२
२. विनायक ʼʼ ७३
३. पीलो ʼʼ ७६
४. नामकरण ʼʼ ७७
५. बधाओ ʼʼ ७८
६. बीरो ʼʼ ७९
७. नेगचार ʼʼ ८०
८. समठूणी ʼʼ ८१
९. तोरण ʼʼ ८२

१०. सीख-१	''	८३
११. बिदाई-१	''	८४
१२. सीख-२	''	८५
१३. नामकरण-२	श्री पुष्पा दुगड़	८६
१४. नामकरण-३	''	८७
१५. स्वागत-१	''	८८
१६. स्वागत-२	''	८९
१७. बत्तीसी	श्री पारस जैन (हुबली	९०
१८. बिदाई-२	हंसराज गंग (प्रतापगंज)	९१
१९. उद्‌बोधन	शासन गौरव मुनि मधुकर	९२

जैन संस्कार
प्रकाशकीय

'संस्कार गुणाद्यान' अर्थात संस्कार का अर्थ है गुणों का आद्यान और अवगुणों का अपसारण। जैन संस्कार है जैन श्रावक के बारह व्रतों पर आधारित जीवन शैली की अनुपालना।

सामाजिक प्राणी होने कारण जैन श्रावक को भी हर्ष और गम की अभिव्यक्ति के लिए कुछ परंपराओं एवं प्रथाओं का पालन करना पड़ता है।

जन्म, नामकरण, विवाह, मत्यु आदि आयोजनों के साथ-साथ कई उत्सओं पर सामाजिक परंपराओं एवं दायित्यों का निर्वाह करना पड़ता है।

तेरापंथ धर्मसंघ के नवम् अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी एक युगदष्टा आचार्य हुए हैं उन्होंने न केवल संघ विकास के अनेक आयाम उद्घाटित किए बल्कि उनके अवदानों से जन-जन को जीवन जीने की नई दिशा मिली है। व्यक्ति संयमित जीवन जिए इस हेतु सामाजिक कुरीतियों एवं रूढ़ परंपराओं पर आपने कड़ा प्रहार किया। गणाधिपति गुरूदेव का यह चिंतन था कि हमारा आचार-व्यवहार जैनत्व के अनुरूप हो इसी को दष्टिगत रखते हुए आयोजनों एवं उत्सवों को संपादित करने हेतु जैन संस्कति के अनुरूप एक प्रारूप तैयार हुआ, जिसे जैन संस्कार विधि के नाम से जाना जाने लगा। इस कार्य में आदरणीय श्री भोजराज जी संचेती का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा या यूँ कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि श्री भोजराज जी संचेती इस विधि के जनक बनें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद ने जैन संस्कार के प्रचार-प्रसार का दायित्व ग्रहण किया और सक्रियता से इस कार्य को आगे बढ़ाया है। परिषद ने समय-समय पर विभिन्न शिविरों के माध्यम से इस विधि को घर-घर तक पहुंचाने का प्रयास किया है। तर्कसंगत, युक्तिसंगत एवं रूढ़िमुक्त होने के साथ-साथ जैन संस्कार विधि में संयम, आस्था और अहिंसा परिलक्षित है। विधि में अरिहंत, सिद्ध, साधु एवं केवली भाषित धर्म को साक्षी मानकर संस्कारों का आयोजन किया जाता है।

प्रसन्नता है कि जैन संस्कार विधि से दीपावली पूजन, नामकरण, गहप्रवेश, विवाह आदि अनेकों आयोजन हो रहे हैं। अनेक जैन संस्कारक भी तैयार हुए हैं। जैन संस्कति की एक आवाज बनी है। पर इस दिशा में अभी हमारी मंजिल बहुत दूर है। विश्वास है, परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाप्रज्ञ के मंगल आशिर्वाद से हम रूढ़ परंपराओं को समाप्त कर पाएंगे और जैन संस्कार प्रचार-प्रसार अभियान को घर—घर तक पहुंचाने में सफल हो सकेंगे।

जैन संस्कार विधि घर—घर तक पहुंचे, प्रत्येक व्यक्ति इस विधि में परिचित हो, इस दष्टि से जैन संस्कार विधि की पूरी प्रक्रिया को एक पुस्तक "जैन संस्कार" में समाहित किया गया है। इस पुस्तक के पंद्रह संस्करण पूर्व में प्रकाशित हो चुके हैं। नवीन संस्करण में शुभारंभ संस्कार, हीरक/स्वर्ण/रजत जयंती संस्कार, तप अनुष्ठान पारायण संस्कार आदि अनेक आयोजनों-संस्कारों की विधि का समावेश भी किया गया है। आवश्यकतानुसार विधियों में अपेक्षित संशोधन भी किया गया है। इस संस्करण के लिए आवश्यक प्रकाशन सामग्री तैयार करवाने में परिषद् के पूर्व अध्यक्ष श्री पदमचंद पटावरी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रकाशन में सहयोगी सभी महानुभावों के प्रति हार्दिक आभार। "जैन संस्कार" के इस सोलहवें संस्करण को आपके हाथों में पहुंचाकर परिषद् गौरव की अनुभूति कर रही है। संस्कारों एवं संस्कारकों के लिए नया संस्करण उपयोगी सिद्ध हो, इसी मंगलकामना के साथ—
ॐ अर्हम्।

रतन दूगड़
अध्यक्ष

अरूण संचेती
महामंत्री

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

© अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

प्रकाशक :
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्
'युवालोक' लाडनूं-३४१ ३०६ (राजस्थान)

अठारहवां संस्करण : २००७

मूल्य : २०.००

मुद्रक : शांति प्रिंटर्स एण्ड सप्लायर्स
मोबाईल : 9811101103

JAIN SANSKAR Rs. 20/-

१.	उद्‌बोधन – गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी	५
२.	जैन जीवन शैली – आचार्यश्री महाप्रज्ञ	६
३.	प्राक्कथन	७
४.	नव आयामी जैन जीवन शैली	१०
५.	जैन संस्कार विधि : संविधान सम्मत – सोहनराजजी कोठारी, पूर्व न्यायाधीश	१४
६.	जैन संस्कार विधि : एक परिचय – 'युवा गौरव' पदमचन्द पटावरी	१६
७.	मंगल भावना यंत्र : एक विश्लेषण	२६
८.	श्रावक समाज को सम्बोधन – गणाधिपति गुरुदेव श्रीतुलसी	३०
९.	आवश्यक निर्देश	३२
१०.	संस्कारकों के लिए करणीय	३३
११.	दीपावली पर्व	३५
१२.	नामकरण संस्कार	३६
१३.	विवाह संस्कार	४२
१४.	जन्म दिवस संस्कार (Birthday)	५२
१५.	शिलान्यास संस्कार	५४

१६. गह प्रवेश संस्कार ५६
१७. शुभारम्भ संस्कार (Opening Ceremony) ५६
१८. अंक (गोद) आपूर्त्ति संस्कार ६१
१६. यात्रा प्रस्थान ६४
२०. हीरक/स्वर्ण/रजत जयन्ती संस्कार ६५
२१. तप अनुष्ठान सम्पूर्ति संस्कार ६६
२२. अनशन (संथारा) विधि ७०
२३. अन्तिम संस्कार की विधि ७२
२४. चारित्रात्माओं के अंतिम संस्कार की विधि ७७
२५. संथारे में स्वर्गवासी श्रावक/श्राविकाओं के अन्तिम संस्कार की विधि ७८
२६. स्मति सभा (उठावन) का आयोजन ८०
२८. **परिशिष्ट संख्या १**
नामकरण से सम्बन्धित तथ्य
परिशिष्ट संख्या २
मांगलिक दिवस (अपूछ सावा)
परिशिष्ट संख्या ३
१–मंगल गीत
२–विनायक
३–पीलो
४–नामकरण (१)
५–नामकरण (२)
६–नामकरण (३)
७–बधाओ
८–बीरो
६–नेगचार
१०–समठूणी
११–तोरण
१२–सीख (१)
१३–सीख (२)
१४–विदाई (१)
१५–विदाई (२)
१६–स्वागत (१)
१७–स्वागत (२)
१८–बत्तीसी
१६–उद्‌बोधन
परिशिष्ट संख्या ४
उपसर्गहर स्तोत्र
महावीर स्तुति
महावीर स्मरण
परिशिष्ट संख्या ५
वैराग्यपरक गीत
बारह भावना (दोहे)
परिशिष्ट संख्या ६
संस्कारक हेतु आवेदन पत्र (प्रारूप)
नामकरण पत्रक (प्रारूप)

प्रायः सभी लोग चाहते हैं कि जीवन हल्का हो, किन्तु कठिनाई यह है कि वे उसकी प्रक्रिया को नहीं अपनाते। प्रक्रिया को अपनाये बिना केवल कथन मात्र से जीवन हल्का हो जाये इसका अर्थ यह होगा कि बिना परिश्रम के ही मनुष्य को सब कुछ प्राप्त हो सकता है। पर वह 'न भूयं न भविस्सई'-न कभी हुआ है न कभी होगा। यदि वैसा प्रयोग किया जाए तो मेरे विचार में निश्चित ही जीवन हल्का हो सकता है।

जहाँ जीवन है वहाँ अनेक प्रकार की स्थितियों में से गुजरना पड़ता है तथा अनेक प्रकार के संस्कारों से संस्कारित होना पड़ता है। उनमें परिष्कार की अपेक्षा है। मैं सोचता हूं कि 'जैन संस्कार विधि' का प्रारम्भ इसी उद्देश्य से किया गया है। यह किसी के प्रति प्रक्रिया का रूप न होकर मात्र अपने आपको अल्पारंभ और अल्प परिग्रह की दिशा में ले जाने का प्रयत्न होगा तो निश्चित ही जीवन के लिए एक दिशा-दर्शन बन सकेगा।

गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी

'जीवन शैली बदले' इस स्वर को ध्यान में रखकर आचार्य श्री तुलसी ने जैन जीवन शैली का सुव्यवस्थित रूप जनता के सामने प्रस्तुत किया है।

शरीर, श्वास, इन्द्रिय, प्राण, मन, भाव और चेतना का समन्वय है जीवन। जीवन की वही शैली अच्छी हो सकती है, जिसमें शरीर को स्वस्थ, श्वास को लयबद्ध, इन्द्रिय को कार्यक्षम, प्राण को गतिशील, मन को एकाग्र, भाव को विशुद्ध और चेतना को निरावरण बनने का अवसर मिले। जैन जीवन शैली के नौ सूत्रों का निर्धारण इसी पृष्ठभूमि पर किया गया है।

जीवन एक लम्बी यात्रा है। जन्म विवाह तथा मत्यु उस यात्रा के प्रमुख पड़ाव है। यह स्वाभाविक है कि ऐसे अवसरों पर आदमी अपनी सामाजिकता को मूर्तरूप प्रदान करता है, अपने सुख-दुख को बांटता है। सुख जहां बंट कर अमिट हो जाता है वहां दुख बंट कर शांत-सुगम हो जाता है। इसलिए ऐसे क्षण आदमी की जिन्दगी के स्मरणीय अवसर बन जाते हैं। पर ऐसे अवसरों पर आदमी की आस्था की भी अभिव्यक्ति होती है। वही आदमी कीमती बनता है जिसकी घनीभूत आस्था उसके व्यवहारों में भी प्रतिबिम्बित हो। आस्था और व्यवहार का द्वैत आदमी को अन्दर से विघटित करता है। जिसकी आस्था मजबूत होती है वही अपने लक्ष्य तक पहुंचता है, जिसकी आस्था कमजोर होती है वह बिखर जाता है।

यह सही है कि श्रावक एक सामाजिक प्राणी होता है। समाज में रहते हुए कुछ परम्पराओं की अनुपालना करना भी आवश्यक हो जाता है। पर कम से कम वे परम्पराएं-प्रथाएं ऐसी तो नहीं होनी चाहिए जो उसके श्रावकत्व को धूमिल करती हो। भिन्न-भिन्न संस्कतियों ने मनुष्य के हर्ष और गम को अभिव्यक्त करने के विभिन्न प्रारूप प्रदान किए है, पर आज यह प्रतिलेखन का विषय है कि जैन श्रावक अपनी संस्कति का कितना समादार कर रहे है। भगवान महावीर ने बारह व्रतों के रूप में श्रावक जीवन को एक आकार प्रदान करने का प्रयास किया था। पर मध्यकाल में एक ऐसा समय आया कि जैन लोग अपने संस्कतिक मूल्यों से हटने के लिए मजबूर हो गए। अस्तित्व की सुरक्षा के लिए उन्हें कुछ अन्य संस्कतियों की प्रथाओं को अपनाने के लिए विवश होना पड़ा। यह एक ऐसी विवशता थी जिससे बच पाना असम्भव था। धीरे-धीरे वे संस्कार इतने गहरे हो गए कि जैन लोग अपनी मौलिकताओं को ही भूल गए। वह स्थिति उनके जीवन के
पोर-पोर में समा गई। तीज-त्योहार आदि अवसर भी इस प्रभाव से अछूते नहीं रहे।

गणाधिपति श्री तुलसी ने हमें अपनी मौलिकताओं से परिचित कराने का अवसर प्रदान किया। आचार्यश्री का यह कहना नहीं था कि श्रावक हर्ष और शोक का इजहार न करे, पर उनका यह कहना विशेष ध्यान देने योग्य है कि जैन लोग अपने सांस्कतिक गौरव को समझें। गणाधिपति के उद्‌बोधन से हमारे समाज में एक जागरण आया और जैन संस्कति के अनुरूप एक प्रारूप तैयार हुआ। उस प्रारूप के निर्धारण में 'शासन सेवी' स्व० भोजराजजी संचेती (मोमासर) का प्रमुख हाथ है। उन्होंने इस प्रयोग को अपने घर में ही नहीं अन्य अनेक परिवारों में सम्पन्न करवाया है। बौद्धिक वर्ग में भी इसकी अच्छी प्रतिक्रिया हुई है। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् ने 'संस्कार निर्माण' के तहत इस दिशा में कई कदम उठाए है।

आर्थिक संपन्नता तथा पाश्चात्य संस्कति के प्रभाव से सामाजिक रीति-रश्मों में आज इतना आडम्बर बढ़ रहा है जो आर्थिक दष्टि से भी भारी भरकम होने के साथ-साथ सामाजिक दष्टि से भी अटपटा सा लगता है। यह वातावरण सामाजिक आदमी के लिए एक समस्या बन गया है। तेरापंथ युवक परिषद् ने इस दष्टि से भी चिन्तन किया है। हमें ,खुशी है कि उस दिशा में काफी कुछ कार्य हुआ है। आज जैन संस्कति की एक आवाज बनी है। अनेक समाज-सेवी संस्कारक भी तैयार हुए हैं फिर भी इस दिशा में अभी हमारी मंजिल बहुत दूर है।

यद्यपि 'जैन संस्कार' की हजारों प्रतियां जन-जन के हाथों पहुँच चुकी है, फिर भी हमें रूढ़ धारणाओं को रूपांतरित करने में काफी श्रम करना पड़ेगा। हमें विश्वास है कि हमारे नौजवान साथी इस दष्टि से अपने दायित्व को सम्भालेंगे तथा आने वाली हर चुनौती का साहसपूर्ण मुकाबला कर समाज में एक स्वस्थ वातावरण पैदा करेंगे। परमाराध्य गुरुदेव का वरद आशीर्वाद हमारे साथ है।

इसी आशा के साथ 'जैन संस्कार' पुस्तक का यह अठारहवां संस्करण आपके हाथों में प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। इस विधि से दीपावली, नामकरण, गहप्रवेश आदि अनेक आयोजन प्रतिवर्ष हजारों घरों में होने प्रारम्भ हो गए है। शादियां भी एक हजार से अधिक हो चुकी हैं। अब

तो बुद्धिजीवी साथी एवं उच्च परिवार भी इस विधि को बिना किसी हिचक के अपना रहे हैं। फिर भी हमारे कुछ रूढ़ि चुस्त महानुभावों के मन में यह बू है कि यह विधि संविधान सम्मत नहीं है। पाठकों की सुविधा के लिए इस पुस्तक में हम समाज के जाने माने पूर्व न्यायाधीश स्व० सोहनराज जी कोठारी का एक सटीक आलेख प्रकाशित कर रहे हैं। जो उन बद्धमूल धारणाओं को बदलने में सहायक होगा।

गुरुदेव श्री तुलसी ने अपनी महत्त्वपूर्ण कीर्ति 'श्रावक संबोध' में भी जैन संस्कार विधि का जो उल्लेख किया है। श्रावक समाज की जानकारी के लिए इस संस्करण में उस विकरण को समाहित किया गया हैं।

मंगल भावना यंत्र की क्या उपयोगिता है, इसका क्या उद्देश्य है, उन भावनाओं का क्या प्रभाव है आदि की विस्तत जानकारी भी इस संस्करण में प्रकाशित की गयी है ताकि जन-मानस इसकी सार्थकता से परिचित हो सके।

जैन जीवन शैली इस संस्करण में श्रद्धेय आचार्यश्री तुलसी द्वारा निर्धारित 'जैन जीवन शैली' की रूपरेखा भी दी जा रही है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ का स्वप्न है जैन व्यक्ति की पहचान उसके जीवन व्यवहार से हो। तेयुप इस संस्कार परक अभियान को घर-घर पहुंचाना चाहती है। इस अभियान में पूरे समाज का सहयोग अपेक्षित है। आप सबके सहयोग की कामना के साथ।

रतन दुगड़
अध्यक्ष
अ.भा.ते.यु.प.

आस्था सूत्र

अरहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो।
जिणपण्णत्तं तत्तं, इय सम्मत्तं मए गहियं ।।

व्याख्या सूत्र :

१. सम्यक् दष्टिकोण-विधायक दष्टिकोण का विकास।
२. तीव्र कषाय–क्रोध, मान, माया और लोभ का उपशम।
३. फैशन, प्रदर्शन और आडम्बर मूलक किसी भी प्रवत्ति का अन्धानुकरण नहीं करना, विवेक पूर्वक चिन्तन करना।

व्याख्या सूत्र :

१. सापेक्ष दष्टिकोण का विकास।
२. विवादास्पद प्रसंग में यथासंभव साम जस्य स्थापित करने का प्रयास।
३. दुराग्रह से बचने का लक्ष्य।

व्याख्या सूत्र :

१. अनावश्यक हिंसा एवं क्रूरतापूर्ण व्यवहार का वर्जन।
२. आत्महत्या, पर हत्या एवं भ्रूण हत्या का परित्याग।
३. संवेदनशीलता का विकास।

व्याख्या सूत्र :

सम : १. मानवीय एकता में विश्वास।
२. जाति आदि के आधार पर किसी के साथ घणापूर्ण व्यवहार नहीं करना।
३. किसी को अस्पश्य (अछूत) नहीं मानना।
शम : १. शान्त सहवास का अभ्यास।
२. आवेग नियन्त्रण का अभ्यास।
३. व्यवहार में संतुलन का अभ्यास।
श्रम : १. श्रम निष्ठा का विकास।
२. स्वावलम्बन का अभ्यास।
३. दूसरे के श्रम का शोषण नहीं करना।

व्याख्या सूत्र :

१. व्यक्तिगत संग्रह और उपभोग का सीमाकरण।
२. क्रूर हिंसा-जन्य प्रसाधन सामग्री का वर्जन।
३. विसर्जन का प्रयोग।

व्याख्या सूत्र :
१. शराब आदि मादक तथा मांस, मत्स्य, अंडा आदि अभक्ष्य पदार्थों का व्यापार नहीं करना।
२. तस्करी (स्मगलिंग) का व्यापार नहीं करना।
३. खाद्य पदार्थों में मिलावट नहीं करना
(शस्त्र आदि का व्यापार नहीं करना)

व्याख्या सूत्र :
१. मिलन प्रसंग, पत्र व्यवहार आदि बोलने और लिखने में 'जय जिनेन्द्र' वाक्य का प्रयोग करना।
२. घर, दुकान, कार्यालय आदि की साज सज्जा में जैन संस्कति को प्राथमिकता देना।
३. जन्म, विवाह, मत्यु, तपस्या आदि प्रसंगों पर दिखावा अपव्यय एवं अर्थहीन रूढ़ियों से मुक्त रहना।

व्याख्या सूत्र :
१. खान पान को शुद्ध रखना, मांस, अंडे आदि का वर्जन करना।
२. मादक व नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करना।
३. द्यूत आदि दुर्व्यसनों से बचना।

व्याख्या सूत्र :
१. नमस्कार महामंत्र के प्रति गहरी आस्था रखने वाले को अपना साधर्मिक मानना।
२. साधर्मिकों के साथ भाईचारे का व्यवहार करना।
३. परिवार के सदस्य की तरह रहने वाले कर्मकरों को साधर्मिक बनाने का प्रयास करना।
- उन्हें नमस्कार महामंत्र सिखलाना।
- उन्हें व्यसन मुक्त बनाना।
- संवत्सरी का उपवास करने की प्रेरणा देना।

जैन जीवन शैली के आधार पर दिशा-परिवर्तन के इच्छुक व्यक्तियों के लिए प्राथमिक रूप में न्यूनतम

१. प्रातः सूर्योदय से पूर्व जागरण का अभ्यास और प्रतिदिन तीन समय (जागरण के तत्काल बाद, मध्याह्न भोजन से पहले और रात्रि में सोने के ठीक पहले) कम-से-कम पांच नमस्कार महामंत्र का उच्चारण करना।

२. सप्ताह में कम-से-कम एक सामायिक की साधना करना।

३. प्रतिदिन या प्रति सप्ताह कुछ समय धार्मिक पुस्तकों का स्वाध्याय, जैसे-जैन तत्त्व विद्या, तेरापंथ प्रबोध आदि।

४. सप्ताह में कम से कम एक दिन रात्रि भोजन नहीं करना।

५. सप्ताह में कम से कम एक दिन बच्चों को संस्कारी बनाने की दष्टि से कोई उपक्रम करना।

६. घर, दुकान, कार्यालय आदि की साज सज्जा में जैन संस्कति को प्राथमिकता देना।

७. मद्य-मांस और नशीली वस्तुओं का सर्वथा परित्याग करना।

सोहनराज कोठारी, पूर्व न्यायाधीश

इस देश में अधिसंख्य जनता हिन्दू धर्म की अनुयायी होने, उनकी अपरिमित शक्ति होने व मध्यकाल में उग्रवादी हिन्दुओं द्वारा अपने संस्कार, शक्ति के बल पर थोपने की प्रक्रिया के फलस्वरूप अनेक शताब्दियों से जैन समुदाय के लोगों ने अपनी अल्प संख्या होने के कारण अपनी व्यक्तिगत साधना के लिए जैन साधना पद्धति का अनुसरण यथावत् रखा। पर सामाजिक साधना-संस्कारों में हिन्दू धर्म के संस्कारों को स्थान दिया ताकि बहुसंख्यक समाज के साथ टकराव से बचा जा सके। देश की स्वतंत्रता के साथ हर समाज में एक नई चेतना का संचार हुआ व अपना स्वतंत्र परिचय व अस्तित्व रखने की भावना बनी। इसी का परिणाम था कि जैन समाज के लोगों ने जन्म, नामकरण, विवाह, मत्यु आदि अवसरों पर हिंसा को अधिक प्रश्रय न देते हुए अपने आप्त पुरूषों के स्मरण व उनकी अमतवाणी के उद्घोष के साथ समारोह मनाने का निश्चय किया और अ.भा. तेरापंथ युवक परिषद ने दो दशक पूर्व इस निश्चय की क्रियान्विति की। जैन संस्कारों से प्रेरित व अनुप्रमाणित इन समारोहों में 'विवाह' एक विशिष्ट समारोह व उनकी वैधता को लेकर कई बार विचार-विमर्श हुआ है। ऐसी स्थिति में वर्षों तक विधि-शास्त्र का विद्यार्थी, प्रयोक्ता, अभिभाषक व संरक्षक रहने के कारण मैं विधि के अनुसार इसका समाधान देना चाहूँगा।

हिन्दू संस्कार विधि में विवाह के समय हवन होना व हवनकुण्ड की पति-पत्नी द्वारा सात बार परिक्रमा होना आवश्यक है। चूँकि हवन में काफी समय तक अग्नि प्रज्वलित करनी व रखनी पड़ती है और जैन धर्म अग्नि को सजीव मानता है। अतः ऐसे अग्नि प्रयोग में असंख्य जीवों की घात-प्रतिघात निहित है। यह सही है कि अग्नि में ऊष्मा व प्रकाश होता है एवं उसके ऊर्ध्वगामिनी होने व विकतियों के भस्म करने का उसका अपना विशिष्ट गुण है। अतः इन विशेषताओं व उपयोगिताओं को दष्टिगत

रखते हुए हिन्दू संस्कारों में उसे ''अग्निदेव'' कहकर उपमित किया है व पूजनीय, अर्चनीय माना है। संभवतः इस कारण उसकी साक्षी को पवित्र मानकर उसके समक्ष विवाह की सम्पन्नता को आवश्यक मान लिया गया है। पर जैन संस्कारों में मात्र समाजोपयोगिता के आधार पर किसी वस्तु को पवित्र या पूजनीय नहीं माना गया है। जैन संस्कारों में मात्र अर्हत्, सिद्ध, साधु एवं केवली प्ररूपित धर्म ही मंगल है, उत्तम एवं वंदनीय, पूजनीय है। इस स्थिति में उनके पवित्र स्मरण की साक्षी से ही जैन संस्कार विधि में विवाह को संपन्न करने का प्रावधान किया गया है। जैन दर्शन अग्नि को मात्र एकेन्द्रिय जीव मानता है, अतः यह हास्यास्पद भी हो सकता है कि एकेन्द्रिय की साक्षी से जीव हिंसा कर विवेकशील पंचेन्द्रिय मनुष्य जीवन के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य परिणय-सम्बन्ध को सम्पन्न करे। विशुद्ध अहिंसक, दार्शनिक एवं युक्ति संगत दष्टिकोण को अपनाकर जैन संस्कार विधि से होने वाले विवाहों में न तो अग्नि प्रज्वलित की जाती है, न हवन होता है, न हवनकुण्ड की पति-पत्नी द्वारा सात बार प्रदक्षिणा दी जाती है। अतः मुख्य प्रश्न यही रह जाता है कि हवन कुण्ड में अग्नि प्रज्वलित किये वगैर या उसकी प्रदक्षिणा दिये बिना सम्पन्न विवाह विधि सम्मत है या नहीं। यहां यह कहना असंगत नहीं होगा कि जैन समुदाय के लोगों के व्यक्तिगत अधिकार यथा-उत्तराधिकार, विवाह, गोद, संरक्षण, सम्पत्ति-हस्तांतरण आदि के विषयों में अलग से कोई विधि-शास्त्र नहीं है। उनके अन्तर्गत जैन समुदाय के लोगों के अधिकारों का निर्णय होता है और हिन्दू समाज की परिभाषा में जैन, बौद्ध, सिक्ख आदि को समाहित कर लिया गया है। अलबत्ता कई मामलों में इन समुदायों से समान्य, हिन्दू समाज से भिन्न लम्बे समय तक निर्बाध रूप से किसी उचित एवं युक्ति संगत परम्परा या रिवाज का प्रचलन रहा हो तो उसे न्यायिक संस्थानों ने विधि के समान मान्यता प्रदान की है। इस पष्ठभूमि में ही जैन संस्कारों से संपन्न विवाह की वैधता पर विचार करना सुसंगत होगा।

हिन्दू विवाह अधिनियम १९५५ में धारा२(बी) में स्पष्ट किया गया है कि यह अधिनियम बौद्ध, जैन या सिक्ख धर्मावलम्बियों पर समान रूप से लागू होगा। इस अधिनियम की धारा५ में यह भी स्पष्ट किया गया कि किन परिस्थितियों में दो हिन्दूओं के बीच विवाह हो सकता है। चूँकि यह हमारी चर्चा का विषय नहीं है, अतः इसके विस्तार में जाना आवश्यक नहीं है। इस अधिनियम की धारा७ में हिन्दू विवाह की सम्पन्नता के लिए आवश्यक अनुष्ठानों का विवेचन है। धारा७(१) में स्पष्ट प्रावधान है कि हिन्दू विवाह किसी पक्ष के परम्परागत रिवाज, पद्धति या अनुष्ठान के अनुसार सम्पन्न हो सकता है व धारा७(२) में प्रावधान है कि जहाँ ऐसी पद्धति या अनुष्ठान में 'सप्तपदी' जिसमें वर-वधु द्वारा संयुक्त रूप से हवन कुंड की सात बार प्रदक्षिणा या सात कदम चलना कहा जा जाता है, आवश्यक है। वहाँ विवाह सातवीं प्रदक्षिणा या सातवीं पद यात्रा होने पर ही सम्पूर्ण व प्रभावी माना जायेगा। उपरोक्त प्रावधान में परम्परागत रिवाज या अनुष्ठान शब्द महत्त्वपूर्ण होने से मैंने इनको विशेष तौर से रेखांकित किया है।

हिन्दू विवाह अधिनियम की धारा३(अ) में 'परम्परागत रिवाज' को परिभाषित करते हुए बताया गया है कि किसी स्थानीय क्षेत्र, जाति, कुल, समूह या परिवार में कोई नियम लगातार समान रूप से लम्बे समय तक लागू रहा हो उसने विधि की तरह अनिवार्य परिपालन का स्वरूप ग्रहण कर लिया हो उसे परम्परागत रिवाज माना जायेगा। धारा७(१) ने ऐसे परम्परागत रिवाज की पद्धति को मान्यता दी है। सर्वोच्च न्यायालय ने ''भाऊराव बनाम महाराष्ट्र राज्य'' (ए.आई.आर. १९६५ पष्ठ संख्या १५६४ पर प्रकाशित) में यह प्रतिपादित किया है कि अगर कोई पद्धति अधिनियम की परिभाषा के अनुसार परम्परागत रिवाज नहीं बनी है तो उसको विवाह के लिए प्रभावी या वैध मानने में महत्त्व नहीं दिया जा सकता।

इसके बाद बम्बई उच्च न्यायालय ने ''बेबी बनाम जयन्त'' (ए.आई.आर.१९८१ बम्बई पष्ठ-२८३(२९५) में प्रकाशित) केस में यह माना है कि नव बौद्धों (जो अनुसूचित जाति से बाद में बौद्ध धर्म में दीक्षित हुए) में २५ वर्षों से लगातार समान रूप से एक परम्परागत रिवाज पद्धति अपनाई जा रही है तो इसका

प्रमाण कानून या विधि से समान माना जायेगा। न्यायालय ने अपने निर्णय में कहा 'अगर पद्धति या अनुष्ठान से भिन्न या अलग पद्धति या अनुष्ठान किसी जाति के द्वारा परिपालन किया जा रहा हो तो एक निश्चित अवधि के बाद विधि को उसे मान्यता देकर प्रभावी मानना पड़ेगा क्योंकि अगर न्यायालय ने ऐसा नहीं माना तो इन विवाहों से परिणय संबंधों में बंधे अनेक परिवारों को अनगिन आपदाएं झेलनी पड़ेंगी।'

तमिलनाडु राज्य ने वैवाहिक व्यवस्था में सुधार एवं प्रगतिमूल धारा को महत्त्व देते हुए सन् १९६७ में इस विवाह अधिनियम में संशोधन कर सम्बन्धियों व रिश्तेदारों की उपस्थिति में वर-वधू द्वारा अपना संबंध घोषित कर, एक दूसरे को माला पहनाकर व पल्लू में गाँठे देकर मनाए जाने वाले विवाह को वैध माना है। ''आनन्द विवाह अधिनियम'' के अनुसार आनन्द पद्धति से सिक्खों में होने वाले विवाह को वैध माना गया है। युग की आवश्यकता व मांग है कि हिन्दू विवाह या अधिनियम में संशोधन कर ऐसा सरल, सुगम व सुधारवादी पद्धति को मान्यता दी जाए। यह संसद या विधायिका के लिए सोचने का विषय है पर मेरे विचार में बम्बई उच्च न्यायालय के उपरोक्त निर्णय में प्रतिपादित सिद्धांत को जैन संस्कार पद्धति से सम्पन्न विवाहों पर भली-भाँति लागू किया जा सकता है। भारतवर्ष के अधिकांश राज्यों में गत २५ वर्षों से अब तक जैन समुदाय में समान रूप एक ही पद्धति के अनुसार हजारों विवाह संपन्न हो चुके हैं व उन विवाहों के फलस्वरूप संतति का विस्तार हो चुका है। जैन संस्कार पद्धति एक सुनिश्चित, युक्तिसंगत, उचित अहिंसा की दार्शनिक मान्यता के अनुसार है। अतः इतने लम्बे समय तक सतत निर्बाध व इकसार पद्धति से संस्कारित विवाह परम्परागत रिवाज पद्धति से किया जाना ही माना जायेगा व इस स्थिति में धारा७(१) हिन्दू विवाह अधिनियम के अनुसार ये विवाह विधि संगत हैं, वैध एवं पूर्णतया प्रभावी हैं।

'युवा गौरव' – पदमचंद पटावरी

किसी भी देश एवं समाज को अपनी सांस्कतिक विरासत पर गौरव होता है, वस्तुतः ऐसा होना भी चाहिए। जब हम जैन समाज के अभिन्न अंग के रूप में अपनी सांस्कतिक परंपरा पर दष्टिपात करते हैं तब हमें इस बात का अहसास होता है कि हमें ऐसी संस्कति प्राप्त हुई है जिसका मिलना दुर्लभ संयोग की बात है।

जैन धर्म एवं परंपरा में जहां धार्मिक पक्ष का दिशा निर्देश तीर्थंकरों की वाणी में प्राप्त है वहां सामाजिक पक्ष का निर्धारण जैन समाज के श्रावक वर्ग ने स्वयं अपनी परंपरा एवं गरिमा के अनुरूप समय-समय पर करने की कोशिश की है। धर्मगुरुओं ने भी अपनी सीमा में रहकर समाज को चुस्त, दुरुस्त रखने, अपनी विरासत को अक्षुण्ण रखने एवं तदनुरूप कार्यपद्धति के निर्धारण की दिशा में दष्टि संकेत दिये हैं। शायद यही कारण है कि तुलनात्मक दष्टि से जैन समाज आज भी वक्त के थपेड़े खाकर भी अपेक्षाकत सुसंस्कत, विचारों से समद्ध एवं सात्त्विक बना रह सका है।

यह सच है कि उपभोक्ता संस्कति के प्रभाव एवं जैन संस्कति की अंधी हौड़ ने सामाजिक एवं सांस्कतिक मूल्यों की चूलें हिलाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी है। सांस्कतिक मानक ढलान की ओर जा रहे हैं। विडंबना यह भी है कि एक तरफ धर्माराधना/धर्माचरण की हमारी पद्धति आज भी प्रकारांतर बुलाकर कहा कि यह विधि पूर्णतः न्याय सम्मत है। उन्होंने अपना पूरा मंतव्य आलेख के रूप में दिया जो जैन संस्कार पुस्तक के हर संस्करण में प्रमुखता से प्रकाशित किया जाता रहा है। जैन संस्कार विधि से संपन्न होने वाले विवाह कार्यक्रमों के बारे में उनका निष्कर्ष था कि ये विवाह हिन्दू विवाह अधिनियम की धारा७(१) के अंतर्गत वैध है।

श्रद्धेय आचार्य श्री तुलसी का अभिमत था कि समाज का समद्ध वर्ग एवं संस्थाओं के अग्रिम पदों पर बैठे व्यक्ति इस कार्य में पहल करें। चूंकि यह दायित्व अभातेयुप ने ओढ़ा था अतः मैंने सर्वप्रथम केन्द्रीय पदाधिकारी के रूप में संकल्प स्वीकार किया। प्रसन्नता है कि विगत २२ वर्षों में मेरे परिवार में कोई कार्य जैन संस्कार विधि से हटकर नहीं हुआ है। मेरा अनुभव है कार्यकर्ता की वाणी तभी वजनदार हो सकती है जब उसकी कथनी और करनी में भेद नहीं है। देश के अनेक भागों तक मैंने स्वयं पहुंचकर इस विधि को अंजाम दिया। आदरणीय भोजराज जी साहब तो जीवनपर्यंत इस कार्य को निष्ठा भाव से करते रहे, वे विधि की प्रगति यात्रा में मील के पत्थर के रूप में सदैव याद किये जाते रहेंगे। आज अनेक कार्यकर्ता संस्कारक के रूप में अपनी उल्लेखनीय सेवाएं दे रहे हैं।

विधि का प्रारंभ विवाह कार्यक्रमों को ध्यान में रखकर किया गया तदनंतर इसमें अनेक संस्कार, कार्यक्रम, आयोजन भी जुड़ते गये। इन सभी के लिए स्वतंत्र रूप से विधियां निर्धारित कर दी गई। दीपावली पर बही खातों का शुभारंभ, नामकरण संस्कार, शिलान्यास, गहप्रवेश, यात्रा प्रस्थान, अंतिम संस्कार आदि और भी अनेक विधियां हैं जिनका समावेश इस विधि की पुस्तक में किया गया है। गुरुदेवश्री द्वारा अनुप्राणित नव आयामी जैन जीवन शैली भी इसमें जोड़ी गई है। अनेक मांगलिक अवसरों पर गाये जाने वाले संस्कतिपरक गीतों का भी समावेश विधि की पुस्तक में किया गया है। जिनकी रचनाकार एवं संगायिका कमला भादाणी (श्रीडूंगरगढ़) के प्रति हम सदैव कतज्ञ रहेंगे।

पुस्तक में मंगल भावना यंत्र भी दिया गया है। जिसका उपयोग प्रत्येक मांगलिक कार्यक्रमों में यदि किया जाए तो सहज ही मांगलिक कवच बन जाता है।

विधि में जहां सांस्कतिक वैभव के दर्शन होते हैं वहां इसके वैधानिक स्वरूप को भी चिंतनपूर्वक निर्णित किया गया है। आर्षवाणी एवं मंत्रों का इतना सुंदर समावेश है कि हर मांगलिक कार्य और

अधिक मंगलमय बन जाता है। गुरुदेव श्री तुलसी बहुधा फरमाया करते थे कि जैन संस्कार विधि का उद्देश्य अल्प परिग्रही एवं अल्पारंभी बनने की दिशा में एक प्रस्थान होना चाहिए।

जैन संस्कार विधि का मुख्य लक्ष्य यह तो है ही, इसके साथ-साथ प्रत्येक कार्य में जैनत्व की झलक मिले, यह इस विधि का प्रमुख ध्येय है। विधि में दकियानुसी, रूढ़ धारणाओं एवं परंपराओं के मिथक को तोड़ने की कोशिश की गई है और यह सरल, सहज, प्रभावी एवं सबको स्वीकार्य हो सके, ऐसी कोशिश की गई है।

एक बात स्पष्ट कहना जरूरी समझता हूं कि विधि एवं सादगी ये दोनों अलग-अलग पक्ष हैं। उदाहरणार्थ भारी भरकम शादियों की एवं साधारण शादियों की जिस प्रकार विवाह विधि एक होती है ठीक इसी प्रकार जैन संस्कार विधि सबके लिए समान एवं एकरूपता लिये हुए होती है। समाज यह अवश्य चाहता है कि जैन संस्कार विधि से संपन्न कार्यक्रम यदि सादगी की ओर बढ़ते हैं तो विधि एवं आयोजन की शोभा और गरिमा शतगुणित हो जाती हैं एवं इसके प्रति लोगों की आस्था घनीभूत हो जाती है।

निःसंदेह जैन संस्कार विधि आज भी उस स्तर तक नही पहुंच पाई है जैसा गुरुदेवश्री का सपना था। यद्यपि इसमें किसी प्रकार के दबाव की अपेक्षा नहीं है पर आज भी गुरुदेव का यह संकेत जवाब मांग रहा है कि समाज का धनाढ़्य वर्ग और अग्रिम पंक्ति के कार्यकर्ता इसे स्वीकार करने में क्यों हिचकिचा रहे हैं। मैं सोचता हूं उनका संकोच टूटना चाहिए। निश्चित रूप से अर्थ की सत्ता की चमक और प्रभाव अपने ढंग का होता होगा पर इस विधि को स्वीकार करने से उनके अंदर भी उत्साह में कोई कमी नहीं होगी—समाज उन्हें पर्याप्त आदर और सम्मान के साथ सिर आंखों पर बिठायेगा। आवश्यकता है फिर एक नई पहल ऊपर से हो।

इस कार्य को और अधिक आगे बढ़ाने के लिए अभातेयुप एवं देशभर की तेयुप शाखाओं को एक अभियान चलाना पड़ेगा। व्यापक प्रचार-प्रसार के साथ-साथ सुयोग्य संस्कारकों की प्रशिक्षित टोलियां भी तैयार करनी पड़ेगी।

मेरा विश्वास है कि जैन संस्कार विधि संस्कारों की ऐसी गंगा है जिसे समाज में व्याप्त संस्कारों की गंदगी और रद्दी को अपने प्रवाह में बहा ले जाने का दुरुह कार्य करना है। संस्कारकों एवं इससे जुड़े कार्यकर्ताओं से अनुरोध है कि वे अपनी धार को और तेज करें, वे कभी भी निराश न हो। यदि इस दिशा में कुछ भी पग उठ रहे हैं तो मानना होगा हम एक न एक दिन सुनिश्चित रूप से मंजिल का आरोहण करेंगे ही, क्योंकि यह सपना एक ऐसे महामनीषी का है जिन्होंने जो कुछ सोचा वह पूरा किया। आज वे भले ही सशरीर हमारे बीच नहीं है पर उनका आशीर्वाद, प्रेरणा हम सबके साथ है और यही विश्वास हमारे करणीय की सार्थक मंजिल है और सदैव बनी रहेगी।

जैन संस्कार विधि के अनुसार जन्म संस्कार, विवाह संस्कार दीपावली पूजन आदि कार्यक्रमों के समय इस यंत्र को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता है। जैसा कि इसके नाम से ही प्रतिभाषित होता है यह श्रेय, कल्याण की भावना से संकलित यंत्र है। जैन परम्परा में भावना का सर्वोपरि मूल्य है। शरीर में प्राण का जो स्थान है वही स्थान साधना के क्षेत्र में भावना का है। धर्म ताला है तो भावना चाभी है। कर्म व्याधि है, भावना उस की चिकित्सा है। भावनाओं का चमत्कार विलक्षण है। योग वशिष्ठ में महर्षि व्यास ने लिखा है–

अमतत्वं विषं याति, सदैवामत वेदनात्।
शत्रुर्मित्रत्व मायाति, मित्र संवित्ति वेदनात्।।

अमत का गहन चिन्तन विष को अमत का रूप प्रदान कर देता है। शत्रु को मित्र की आँखों से देखने पर शत्रुभाव मित्रत्व में रूपान्तरित हो जाता है। भावना पानी की तरह तरल, चंचल और रंगहीन वस्तु है। जिस रंग के साथ इसका योग किया जाता है वह वैसा ही दिखाई देता है। पानी के प्रवाह को इक्षु के खेत में मोड़ेंगे तो मधुर रस प्रदान कर देगा। अनाज के खेत का सि चन करेंगे तो जीवनदायी अनाज मिलेगा और तम्बाकु आदि की तरफ मोड़ा तो मादक वस्तुएं निर्मित होंगी। हमारे चित्त की सरिता को हम उच्च भावों की और प्रवाहित करेंगे तो जीवन में आनन्द, सुख और शांति के फूल खिल उठेंगे। अशुभ विचारों की ओर मोड़ेंगे तो अशान्ति और दुःख के काँटे निकल आयेंगे। शुभ भावना संस्कार निर्माण करती है। जीवन को आकार देती है। अन्तःकरण को संवारती है। भावना योग के द्वारा अपने आप को भावित करने हेतु अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् ने मंगल भावना यंत्र को प्रस्तुत किया है।

मंगल भावना यंत्र में एक नव पंखुड़ियों वाला कमल सुशोभित है। जिसके मध्य में अर्हं को स्थापित किया गया है। अर्हं एक शक्तिशाली बीज मंत्र है। मंत्रविद् आचार्यों का कहना है कि मंत्र जप से जीभ पर अमत का स्राव होता है। इससे शरीर शीतल, कांतिमान् और तेजस्वी बनता है। मन निर्विकार होता है। दीर्घकाल तक नियमित जप करने से जीवनमुक्त की स्थिति उपलब्ध हो सकती है।

अर्हं के आगे छोटी-छोटी ६ पंखुड़ियों में पंच परमेष्ठी के प्रतीक पांच अक्षर तथा चार मोक्ष मार्ग के आदि अक्षर अंकित हैं। अ का अर्थ है–अर्हत्, सि–सिद्ध, आ–आचार्य, उ–उपाध्याय, सा–साधु, णां–ज्ञान, दं–दर्शन, च–चारित्र, तथा त का अर्थ है–तप। पंच परमेष्ठी का स्मरण तथा मोक्ष मार्ग की निरन्तर स्मति कराने वाला यह भाग है।

कमल के अगले विस्तत भाग में नौ ऐसे विशिष्ट गुणों का आलेख है, जो जैन धर्म के श्रेष्ठ पुरुषों के साथ जुड़कर अलंकत हुए है।

1. *दिव्य ज्ञान – इसका सम्बन्ध भगवान महावीर से जोड़ा जाता है। जिन्होंने निरावरण, लोकालोक प्रकाशक, विशुद्ध केवल ज्ञान प्राप्त किया था।*
2. *भव्य ज्ञान – गौतम गणधर, जो भगवान महावीर के अन्तेवासी सुशिष्य थे, आगमों में स्थान-स्थान पर महावीर से जिज्ञासाओं का समाधान करते हुए परिलक्षित होते हैं। उनसे इस भव्य ध्यान का सम्बन्ध जोड़ा गया है।*
3. *अनासक्ति – भरत चक्रवर्ती की अनासक्ति सर्वप्रसिद्ध है। ६ खण्डों के अधिपति होते हुए भी वे जल में कमल की भान्ति सदा निर्लिप्त रहे। इस उत्कष्ट अनासक्ति के फलस्वरूप एक दिन ऐसा आया कि उन्होंने 'आदर्श भवन' में कैवल्य श्री का वरण कर लिया।*
4. *शक्ति – जैन धर्म में शक्ति सम्पन्नता की दष्टि से बाहुबली का नाम स्मरण किया जाता है। जो बाह्य और आन्तरिक दोनों प्रकार की शक्तियों से परिपूर्ण थे। इतिहास इस बात का साक्षी है कि भरत चक्रवर्ती के साथ किये जाने वाले हर द्वन्द्वयुद्ध में बाहुबली विजेता बने ओर अन्त में समरांगण में ही आत्म विजेता का विलक्षण दश्य दिखा दिया।*

५. निर्मल बुद्धि – अभय कुमार की निर्मल बुद्धि को प्रभावित करने वाली अनेक घटनाएं पढ़ने में आती हैं। उस समय उपस्थित होने वाली अनेक समस्याओं को अभयकुमार ने अपनी निर्मल बुद्धि से समाहित कर अन्धेरी राहों को उजालों से भर दिया था।

६. ऋद्धि-सिद्धि – धन्ना अणगार भगवान महावीर के तपस्वी सन्तों में प्रथम कोटि के तपोधन थे। उनको अनेक प्रकार की सिद्धियां प्राप्त थी। शालिभद्र ने संगम ग्वाले के भव में दान देकर उत्कष्ट पुण्याई का अर्जन किया। कहा जाता है कि उनके घर में हमेशा देवलोक से ३२ पेटियाँ उतरती थी।

७. शील – शील की महिमा सर्वत्र गाई जाती है। शास्त्रों में कहा गया है – 'तवेसु वा उत्तमं बंभचेरं'-ब्रह्मचारी को देव, दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस आदि सब विनत भाव से नमस्कार करते हैं। सुदर्शन का शील जगत् प्रसिद्ध है। जिसके शील के प्रभाव से शूली सिंहासन बन गई थी।

८. सौभाग्य – राजगह का श्रेष्ठी धनदत्त का पुत्र 'कतपुण्य' था। उसने पूर्व भव में मासिक व्रतधारी मुनि को श्रद्धा भक्ति पूर्वक दान देकर प्रचुर पुण्यों का उपार्जन किया। कतपुण्य के भव में अतिशय सौभाग्य श्री को उपलब्ध किया।

९. सुखश्री – माता मरुदेवी इस अवसर्पिणी काल में प्रथम सिद्ध, बुद्ध और मुक्तात्मा बनी। ऋजुता गुण के कारण अति शीघ्र ही कर्मों की कारा को तोड़ हाथी के होदे पर बैठे-बैठे अनन्त सौख्य को प्राप्त कर लिया।

इससे आगे की विकस्वर ९ पंखुड़ियों में नौ मंगल भावनाओं के आदि अक्षरों का संकेत है एवं सबसे ज्यादा खिली हुई अन्तिम पंखुड़ियों में नौ मंगल भावनाओं को सम्पूर्ण रूप से लिखा गया है। मंगल भावनाओं का अर्थ इस प्रकार है-

१) श्री सम्पन्नो हं स्याम् - मैं लक्ष्मी सम्पन्न बनूं। (लक्ष्मी भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार की होती है)
२) ह्री सम्पन्नो हं स्याम् - मैं लज्जा सम्पन्न बनूं।
३) धी सम्पन्नो हं स्याम् - मैं बुद्धि सम्पन्न बनूं।
४) धति सम्पन्नो हं स्याम् - मैं धैर्य सम्पन्न बनूं।
५) शक्ति सम्पन्नो हं स्याम्- मैं शक्ति सम्पन्न बनूं।
६) शान्ति सम्पन्नो हं स्याम्- मैं शान्ति सम्पन्न बनूं।
७) नन्दी सम्पन्नो हं स्याम् - मैं आनन्द सम्पन्न बनूं।
८) तेजः सम्पन्नो हं स्याम् - मैं आलोक सम्पन्न बनूं।
९) शुक्ल सम्पन्नो हं स्याम्- मैं पवित्रता सम्पन्न बनूं।

बहिनें सम्पन्नो हं के स्थान पर संपन्ना हं का उच्चारण करती हैं।

मंगल भावना यंत्र के चारों किनारों पर चार वाक्य लिखे हुए हैं जो 'लोगस्स की पाटी' से उद्धत हैं।

तित्थयरा मे पसीयन्तु - तीर्थंकर मुझ पर प्रसन्न हों।
आरुग्ग बोहिलाभं - आरोग्य, बोधिलाभ
समाहिवरमुत्तमं दिंतु - समाधि का उत्तम वर दें।
सिद्धा सिद्धिं मम दिसन्तु - सिद्ध मुझे सिद्धि का वरदान दें।

हर व्यक्ति स्वस्थ रहना चाहता है। निर्मल जीवन जीना चाहता है। अपने जीवन में कल्याण की कामना करता है। मंगल भावना यंत्र में वह सब कुछ है। मंगल भावना यंत्र का प्रयोग कर जैसे चाहें, वैसे बनें।

सुत-जन्म विवाह भवन की नींव लगाएँ,
लौकिक-लोकोत्तर जो भी पर्व मनाएं।
श्री वीरजयंती चरम-दिवस दीवाली,
निज वर्षगांठ या अक्षय तीज सुहाली।।

हर प्रसंग में जो उपयोगी,
उपलब्ध जैन संस्कार-विधि ।
सम्यग्दर्शन में सहयोगी,
भावी पीढ़ी की नई निधि ।
क्यों छोड़ इसे अन्धानुकरणमय,
भेड़चाल की ढाल बनें ।
कर समय शक्ति का दुरुपयोग,
बेमतलब ही बेहाल बनें ।।(युग्मम्)

श्री णमोक्कार मंगल-पाटी,
लोगस्स मंत्र उच्चारण हो ।
श्री वीतराग की वाणी से,
सब बाधा-विघ्न निवारण हो ।
देखा देखी की वत्ति छोड़,
अपने विवेक को ही बल दें ।
पुत्रों पौत्रों मित्रों सबको,
सम्यक् संस्कति का संबल दें ।।

श्रावक अनेक प्रकार के लौकिक और लोकोत्तर-धार्मिक पर्व मनाते है। उनमें कुछ प्रमुख पर्व ये हैं-पुत्र-जन्म, विवाह, भवन की नींव रखना, महावीर-जयन्ती, चरम दिन (भिक्षु चरमोत्सव), दीपावली (महावीर-निर्वाण दिवस), वर्षगांठ, अक्षय ततीया इत्यादि-इत्यादि।

उक्त सब प्रसंगों में उपयोगी 'जैन संस्कार विधि' उपलब्ध है। उसका उपयोग सम्यक् दष्टिकोण को पुष्ट करने वाला है। भावी पीढ़ी के लिए वह नया खजाना है। उसे छोड़कर अन्धानुकरण वाली भेड़चाल को संरक्षण और बढ़ावा क्यों दिया जाए ? उसे बढ़ावा देने से समय और शक्ति का दुरुपयोग होता है तथा व्यक्ति बिना मतलब ही बेहाल हो जाता है।

णमुक्कार महामन्त्र, मंगलपाठ, लोगस्स पाठ आदि का मन्त्र के रूप में उच्चारण किया जाए। यह वीतराग की वाणी है। इससे सब प्रकार की विघ्न-बाधाओं का निवारण हो सकता है। इसलिए देखादेखी करने की वत्ति को छोड़कर अपने विवेक को महत्त्व दिया जाए। श्रावक स्वयं जैन संस्कारों को पुष्ट करते हुए अपने पुत्र-पौत्रों, मित्रों आदि सबको सम्यक् संस्कति का पाथेय देते रहें।

१. जैन संस्कार विधि से सम्पन्न सभी कार्यक्रमों में पुस्तक में दिये गये दिशा-निर्देशों के तहत एकरूपता बनाये रखें।

२. सभी प्रकार के कार्यक्रमों का समापन मंगल पाठ के साथ किया जाये।

३. लग्न, मुहूर्त, नक्षत्र आदि की जानकारी के लिए जय पंचांग (सम्पादक—मुनिश्री सुमेरमलजी, लाडनूं) का उपयोग करें। यह प्रतिवर्ष समाज द्वारा प्रकाशित एवं स्वीकत है।

४. मंगल गीत, वहद् मंगल पाठ, उपयोगी स्त्रोत एवं अन्य उपयोगी सामग्री परिशिष्टों में दी गयी है।

५. सभी मांगलिक कार्यक्रमों के पश्चात् अपने वहाँ विराजित चारित्रात्माओं के दर्शन कर मंगल पाठ श्रवण करें।

१. जैन संस्कार विधि पुस्तक के सभी संस्कारों को सम्पन्न कराते समय संस्कारक इस बात की जागरूकता बरते कि विधि में निर्दिष्ट प्रक्रियाओं के अलावा किसी भी प्रकार की रूढ़ परम्परा को प्रश्रय तो नहीं दिया जा रहा है।

२. किसी भी कार्यक्रम में संस्कारक की भूमिका निभाते हुए उपहारस्वरूप शाल, मोमेन्टों, साहित्य या यात्रा व्यय के अतिरिक्त कुछ भी स्वीकार न करें।

३. विवाह संस्कार सम्पन्न कराने के लिए सम्पर्क करने पर संस्कारक दोनों पक्षों को पुस्तक के परिशिष्ट संख्या—५ में मुद्रित प्रारूप की प्रतियां दे एवं उसे विधिवत् भर कर प्राप्त करने के पश्चात् आगे की प्रक्रिया तय करें।

४. 'विवाह स्थापना दिवस' पर स्थापित करने के लिए 'मंगल भावना यंत्र' की प्रतियां सम्बन्धित दोनों पक्षों को उपलब्ध कराने का श्रम करें।

५. विधुर/विधवा विवाह, तलाक पश्चात् के विवाह, बेमेल विवाह आदि प्रसंगों पर आवश्यक जांच-पड़ताल, डोकुमेन्ट्स का अध्ययन एवं सामाजिक जानकारी एवं संतुष्टि के पश्चात् ही ऐसे कार्यक्रमों के लिए विधिवत् स्वीकति प्रदान करें।

६. भारतीय संविधान में वर्णित लड़के (उम्र २१ वर्ष) एवं लड़की (उम्र १८ वर्ष) की उम्र सीमा (विवाह योग्य) से कम के किसी भी विवाह संस्कार के संचालन की स्वीकति न

दीपावली भारत का आध्यात्मिक और सांस्कतिक पर्व है। इस पर्व के साथ विभिन्न संस्कतियों एवं महापुरूषों के जीवन की महत्त्वपूर्ण स्मतियों का ऐसा सम्मिश्रण हो गया है कि उससे किसी एक को अलग करना कठिन है। अलग करना आज आवश्यक भी नहीं है क्योंकि ऐसे पर्वों के सम्यग् आयोजन से ही भावात्मक एकता का निर्माण होता है। इसके विकास में जैनेतर धर्मावलम्बियों का जैसा योग है

वैसा ही जैन धर्मावलम्बियों का भी योगदान है। प्राचीन साहित्य के उल्लेखानुसार दीपावली का एक सम्बन्ध भगवान महावीर के निर्वाण से है। भगवान इस युग के अन्तिम तीर्थंकर थे। उनके निर्वाण के साथ ही सम्पूर्ण विश्व से एक दिव्य ज्योति विलीन हो गई। उस स्मति के प्रतीक स्वरूप जनता ने दीप ज्योति कर अमावस्या के बाह्य अंधकार को मिटाने का प्रयत्न किया। उस दिव्य ज्योतिपुंज की स्मति में केवल बाह्य दीपों को प्रज्वलित कर ही सन्तुष्ट नहीं होना है। उसके लिए आंतरिक ज्योति का जागरण भी आवश्यक है।

परम अहिंसक प्रभु महावीर के निर्वाण की स्तुति स्वरूप सामूहिक ध्यान, जप आदि तो करने ही चाहिए साथ ही दीपावली के अवसर पर पूजन के समय सर्वप्रथम भगवान महावीर प्रभु की भाव वन्दना तथा अपने बही, पत्रों का प्रारम्भ करते समय संस्कति परक शब्द वन्दना हो तो अपने परिवार में महापुरूषों की पावन स्मति के साथ जैनत्व के संस्कार स्वतः उजागर होंगे।

अ	ए	सि
स	आ	मं
उ	प	सा

अ	ए	सि
सं	आ	मं
उ	प	सा

१	१४	४	१५
८	११	५	१०
१३	२	१६	३
१२	७	९	६
ॐ	ह्रीं	श्रीं	क्लीं

इन मन्त्र पदों के उच्चारण के साथ जननी के मस्तक पर तिलक करें, हाथ में मोली बांधें और गुड़ से मुँह मीठा कराएं। जननी और शिशु की ओर अभिमुख होकर निम्न मंत्रों का उच्चारण करें।

ॐ हीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमो नमः
ॐ हीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमो नमः
ॐ हीं श्रीं अर्हं आचार्येभ्यो नमो नमः
ॐ हीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमो नमः
ॐ हीं श्रीं अर्हं गौतमस्वामिप्रमुख सर्वसाधुभ्यो नमो नमः

एसो पंच णमुक्कारो, सव्व पाव पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।।
अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।
अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
अरहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि।।

साहू सरणं पवज्जामि, केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि।

शिशु के मस्तक पर तिलक, हाथ में मोली और गुड़ से मुंह मीठा कराते हुए इस मंत्र पद का उच्चारण करें।

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र-महिताः, सिद्धाश्च सिद्धि-स्थिताः।
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः, पूज्या उपाध्यायकाः।।
श्री सिद्धान्त-सुपाठका मुनिवरा, रत्न-त्रयाराधकाः।
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।

इसके बाद आशीर्वाद सूचक निम्न मंत्रो का उच्चारण करें :–

(क) ॐ ह्रीं श्रीं ग्रहाश्चन्द्र-सूर्याड़्गारक-बुध-वहस्पति-शुक्र-शनैश्चर-राहूकेतु-सहिताः खेटा जिनपतिपुरतो वतिष्ठन्तु, मम-धन-धान्य-जय-विजय-सुख-सौभाग्य-धति-कीर्ति-शान्ति-तुष्टि-पुष्टि-लक्ष्मी-धर्मार्थ-कामदाः स्यु : स्वाहा।

(ख) नाणेण दंसणेण य, चरित्तेण तवेण य।
खंतीए मुत्तीए, वड्ढमाणो भवाहि य।।

जल कलश से शिशु एवं जननी की आरती उतारते हुए उच्चारण करें :–

नो रोगा नैव शोका, न कलहकलना, नारिमारिप्रचारा,
नैवाधिर्नासमाधिर्न च दर-दुरिते दुष्टदारिद्रता च।
नो शाकिन्यो ग्रहा नो न हरिकरि-गणा व्यालवेतालजाला,
जायन्ते पार्श्वचिन्तामणिनतिवशतः प्राणिनां भक्तिभाजाम्।

पीहर पक्ष की ओर से जननी को साड़ी आदि ओढाई जाए और महिलाएँ नामकरण से सम्बन्धित गीत संख्या-३ (देखें परिशिष्ट-३) गाएं: – शिशु का नक्षत्र और राशि के आधार पर जैन संस्कति परक नाम घोषित करें। (देखें परिशिष्ट-१) इसके साथ महिलाओं द्वारा नामकरण से सम्बन्धित गीत (परिशिष्ट-३ में गीत संख्या ५, १४ तथा १५ देखें) से कार्यक्रम सम्पन्न करें।

गहस्थ जीवन का प्रथम चरण विवाह संस्कार है। वह दो चरणों में सम्पन्न होता है। प्रथम चरण है–सगाई, सम्बन्ध अथवा मंगनी और दूसरा चरण है–विवाह। इस विषय में कुछ बातें ध्यान देने योग्य है।

१. सम्बन्ध करते समय पुत्र/पुत्री की योग्यता और इच्छा का विशेष ध्यान रखा जाए।
२. ठहराव न किया जाए और लेन-देन को महत्त्व न दिया जाए।
३. जहां तक हो विवाह तिथि अपूछ सावों (देखें परिशिष्ट-२) की सूची से ही तय करें और विवाह संस्कार दिन में (दिवा लग्न) सम्पन्न करने का ही प्रयास करें।
४. बारात वधू के यहां कम से कम ठहरे, ऐसा प्रयत्न करें।
५. बारात में आने जाने का खर्च एवं मार्गवर्ती भोजन व्यवस्था की जिम्मेवारी वर पक्ष की ही रहे।
६. शराब आदि मादक द्रव्य व अभक्ष्य पदार्थों का सेवन नहीं किया जाए।
७. विवाह मंच पर किसी प्रकार का लेन-देन न किया जाए।
८. सड़कों पर नत्य व आतिशबाजी के प्रयोग से बचा जाए।
९. भेंट, उपहार देना चाहें तो सत् साहित्य ही दें।
१०. वर और वधू की आयु भारतीय संविधान में निर्दिष्ट सीमा के अन्तर्गत ही हो।
११. अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा प्रस्तुत वैवाहिक प्रमाणीकरण पत्रक का प्रयोग अवश्य करें और उसमें सम्बन्धित व्यक्तियों के हस्ताक्षर करवाकर केन्द्रीय कार्यालय में भेजना न भूलें।

वैवाहिक स्थापना दिवस :

वैवाहिक कार्यों का शुभारम्भ मंगल गीत-संख्या-२ (देखें परिशिष्ट-३) के संगान से करें। (यह कार्य वर/वधू के घर एक ही दिन एवं एक ही समय में सम्पन्न किया जाए)

वर/वधू को परिवारिकजनों के मध्य उच्चासन पर बिठाएं।

(क) निवास स्थान के किसी पवित्र स्थान पर वर/वधू के हाथों से 'मंगल भवना यंत्र' निम्न मंगलोच्चारण के साथ स्थापित करवाएंः

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतम प्रभुः।
मंगलं स्थूलभद्राद्याः, जैन धर्मो स्तु मंगलम्।।
शिव मस्तु सर्वजगतः, परहित-निरता भवन्तु भूतगणाः।
दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखी भवतु लोकः।।
सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।

(ख) अभिभावक नमस्कार महामंत्र, मंगल पाठ के स्मरण के पश्चात् घोषणा करे–

मुझे आप परिजनों के बीच घोषणा करते हुए हर्ष होता है कि चिरंजीव/सौ० .... पुत्र/पुत्री .... का शुभ विवाह आगामी सम्वत् .... तिथि .... वार .... तदनुसार दिनांक .... को .... निवासी श्रीमान् .... के पुत्र/पुत्री .... के साथ होना निश्चित हुआ है इसमें चिरंजीव/सौ० ....की पूर्ण स्वीकति है।

नोट : 'मंगल भावना यंत्र' स्थानीय तेरापंथ युवक परिषद् अथवा सम्बन्धित संस्कारक से सम्पर्क कर प्राप्त किया जा सकेगा।

वर/वधू की माता द्वारा पीहर पक्ष को आंमत्रण (बत्तीसी) वर/वधू की माता पीहर पक्ष को विवाह में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित करने जाये अथवा प्रतिनिधि रूप में कोई जाए तब गुड़,

चावल आदि साथ ले जाए एवं आमंत्रण सम्बन्धी गीत-संख्या-६ (देखें परिशिष्ट-३) के साथ पीहर पक्ष (भाई आदि) के तिलक कर आमंत्रित करें।

मायरा (भात) :

वर/वधू के ननिहाल से (मामा द्वारा) भानजे/भानजी की शादी पर भेंट लाने को मायरा कहते हैं। इस अवसर पर वर/वधू (भानजा/भानजी) तथा अपने बहन/बहनोई के तिलक कर वस्त्र आदि भेंट करें।

विवाह संस्कार विधि :

- *संस्कारक या परिवार के प्रमुख व्यक्ति द्वारा नमस्कार महामंत्र एवं मंगल पाठ के श्रवण के साथ पूज्यजनों को प्रणाम कर वर निकट सम्बन्धियों व मित्रों के साथ कन्या-गह की ओर प्रस्थान करे।*
- *कन्या गह में प्रवेश (ढुकाव) के अवसर पर वधू की माता वर के तिलक करे। महिलाएँ सम्बन्धित गीत-संख्या-६ (देखें परिशिष्ट-३) का संगान करें।*
- *विवाह-मण्डप में वर-वधू को पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख बैठाएँ। कन्या को वर के दाहिनी ओर बैठाएँ। आगन्तुक परिजनों को मंचाभिमुख बैठाएँ।*
- *संस्कारक उत्तराभिमुख या पूर्वाभिमुख बैठें। संस्कारक के सम्मुख आरती आदि के लिए विभिन्न सामग्री से युक्त थाल एवं दो मालाएं रखें।*
- *विवाह संस्कार का प्रारम्भ-मंगल स्वागत गीत-संख्या १७ (देखें परिशिष्ट ३) से करें।*
- *थाल के मध्य कुंकुम से 'अर्हम्' या स्वस्तिक* y *का अंकन करें एवं निम्न मन्त्रोच्चारण के साथ वर-वधू के मस्तक पर तिलक तथा हाथ पर मोली बांधे।*

धम्मो मंगल मुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो।
सर्वमंगल मांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम्।
प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयतु शासनम्।।
मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतम प्रभुः।
मंगलं स्थूलभद्राद्याः, जैन धर्मो स्तु मंगलम्।।

- *निम्न मंगल मन्त्रों का दीर्घ स्वर में उच्चारण करें।*

(क) नमस्कार महामन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमो नमः
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमो नमः
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्येभ्यो नमो नमः
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमो नमः
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं गौतमस्वामिप्रमुख सर्वसाधुभ्यो नमो नमः
एसो पंच णमुक्कारो, सव्व पावपणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।।

(ख) मंगल पाठ

अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।
अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा।
साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
अरहंते सरणं पवज्जामि। सिद्धे सरणं पवज्जामि,
साहू सरणं पवज्जामि, केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि।।

प्रस्ताव एवं स्वीकति :

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतम प्रभुः।
मंगलं स्थूलभद्राद्याः, जैनधर्मो स्तु मंगलम्।।

इस मंगल मंत्र के साथ वर-वधू के पिता या अभिभावक के मस्तक पर तिलक एवं हाथ पर मोली बांधकर उनसे प्रस्ताव एवं स्वीकति सूचक शब्दावलि का स्वयं बोलकर सम्बन्धित व्यक्तियों से पुनः उच्चारण करवाएं।

प्रस्ताव : वर के पिता/अभिभावक द्वारा

मैं .....निवासी...........आप श्रीमान् ....निवासी ....की सुपुत्री सौभाग्यवती.......को मेरे सुपुत्र चि०.........की जीवन संगिनी बनाने का प्रस्ताव करता हूँ।

स्वीकति : वधू के पिता/अभिभावक द्वारा

मैं.....निवासी.........अपनी कन्या सौभाग्यवती.........को मेरी, मेरी पत्नी और मेरी पुत्री की सहमति से आज तिथि...............वि० सम्वत्............तदनुसार दिनांक ....वार.................के दिवा/ रात्रि..........बजे यहां (स्थान)..............अपने परिजनों की साक्षी से श्रीमान्.............निवासी..............के सुपुत्र श्री................की जीवन संगिनी बनाने की स्वीकति देता हूँ।

स्वीकति : वर की

मैं............आत्मज श्री..............निवासी.............सुश्री...........सुपुत्री श्रीमान्........को पत्नी के रूप में सहर्ष स्वीकार करता हूं।

स्वीकति : वधू की

मैं..............आत्मजा श्रीमान्..............निवासी.................आप यानि श्री.................को पति के रूप में स्वीकार करती हूँ।

संस्कारक निम्न मंत्रों के समुच्चारण द्वारा वर वधू के मंगल भविष्य की कामना करे।

(क) ॐ नमः पार्श्वनाथाय धरणेन्द्रपद्मावतीसहिताय विषहर- फुलिंग-मंगलाय ॐ ह्रीं चिन्तामणये पार्श्वनाथाय।

(ख) ॐ ह्रीं श्रीं ग्रहाश्चन्द्रसूर्याङ्गारक-बुध-वहस्पति-शुक्र- शनैश्चर-राहूकेतु-सहिताः खेटा जिनपतिपुरतो वतिष्ठन्तु। मम धन-धान्य-जय-विजय-सुख-सौभाग्य-धति-कीर्ति-शान्ति-तुष्टि-पुष्टि-बुद्धि-लक्ष्मी-धर्मार्थ-कामदाः स्युः स्वाहा।

संस्कारक वर-वधू के सामने सप्तपदी का उच्चारण करे। वर-वधू उसे हृदयंगम करे।

सप्त पदी :

१. एक पतिव्रत धर्म का, सबसे ऊँचा स्थान।
आजीवन संगी बने, सदा रखेंगे ध्यान।।

२. एक दूसरे के सही, कार्यों में रहें साथ।
चिंतन पूर्वक हम चलें, सदा मिलाकर हाथ।।

३. जितनी भी है सम्पदा, दोनों का अधिकार।
मिल-जुलकर ऐसे रहें, चकित बने संसार।।

४. रखें परस्पर में सदा, हार्दिक दढ़ विश्वास।
वद्धिंगत हो प्रेम नित, जब तक तन में श्वास।।

५. यथाशक्य सेवा करें, परिजन अपने मान।
पारस्परिक प्रसन्नता, जग में हो सम्मान।।

६. व्यसन मुक्त जीवन जियें, बनें रहें बेदाग।

सिंचन पा सत्कर्म का, खिलता जीवन बाग।।

७. है धार्मिक विश्वास निज, करें नहीं व्याघात।
एक-दूसरे की सुनें, सबसे सुन्दर बात।।

(ग) अर्हन्तं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके।
आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु नासिके।।

* साधुवन्दं मुखस्याग्रे, मनःशुद्धिं विधाय च।
सूर्य-चन्द्र-निरोधेन, सुधीः सर्वार्थसिद्धये।।

* दक्षिणे मदनद्वेषी वामपार्श्वे स्थितो जिनः।
अंगसंधिषु सर्वज्ञः परमेष्ठी शिवंकरः।।

* पूर्वाशां च जिनो रक्षेद् आग्नेयीं विजितेन्द्रियः।
दक्षिणाशां परं ब्रह्म, नैर्ऋतीं च त्रिकालवित्।।

* पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायव्यां परमेश्वरः।
उत्तरां तीर्थकत्, सर्वामीशाने पि निरंजनः।।

* पातालं भगवानर्हन्नाकाशं पुरुषोत्तमः।
रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्षन्तु सकलं कुलम्।।

* ऋषभो मस्तकं रक्षेद्, अजितो पि विलोचने।
संभवः कर्णयुगले भिनन्दनस्तु नासिके।।

* ओष्ठौ श्री सुमती रक्षेद्, दन्तान् पद्मप्रभुर्विभुः।
जिह्वां सुपार्श्वदेवो यं, तालुं चन्द्रप्रभा भिधः।।

* कंठं श्री सुविधी रक्षेद्, हृदयं जिन शीतलः।
श्रेयांसो बाहुयुगलं, वासुपूज्यः करद्वयम्।।

* अंगुलीर्विमलो रक्षेद्, अनन्तो सौ नखानपि।
श्रीधर्मो प्युदरास्थीनि, श्री शांतिर्नाभिमंडलम्।।

* श्री कुन्थुर्गुह्यकं रक्षेद् अरो लोम कटीतटम्।
मल्लिरुरुपष्ठमंशं, पिंडिकां मुनिसुव्रतः।।

* पादांगुलीर्नमीरक्षेद्, श्रीनेमिश्चरणद्वयम्।
श्री पार्श्वनाथः सर्वागं, वर्धमानश्चिदात्मकम्।।

* पथ्वी-जल-तेजस्क-वाय्वाकाशमयं जगत्।
रक्षेदशेषपापेभ्यो, वीतरागो निरंजनः।।

सप्तपदी का संकल्प रूप में स्वीकरण :

संस्कारक वर-वधू को अपने स्थान पर खड़ा करके समवेत उच्चारण के साथ सप्तपदी को जीवन भर के लिए संकल्प रूप में स्वीकार करवाएं।

१. हम दोनों एक पतिव्रत तथा एक पत्नीव्रत का पालन करेंगे।

२. हम दोनों एक दूसरे के हर उचित कार्यों में सहायक होंगे।

३. हम दोनों का सम्पत्ति पर समान अधिकार होगा।

४. हम दोनों एक दूसरे का पूर्ण विश्वास करेंगे।

५. हम दोनों एक दूसरे के परिजनों की यथाशक्य सेवा करेंगे।

६. हम व्यसन मुक्त रहने का प्रयास करेंगे।

७. हम दोनों एक दूसरे के धार्मिक विश्वास में व्याघात नहीं करेंगे।
इन संकल्पों के अनुसार आज से हम दोनों एक दूसरे को अपना जीवन अर्पित करते हैं।

माल्यार्पण एवं पाणिग्रहण :

वर-वधू को परस्पराभिमुख (आमने-सामने) खड़ा करके एक-दूसरे को माल्यार्पण करने का निर्देश दें। यदि सम्बन्धित पक्ष चाहें तो वर व वधू के मस्तक पर सिंदूर लगा सकता है। संस्कारक इस प्रक्रिया को सम्पन्न कराए।
संस्कारक पाणिग्रहण (हथलेवा) करवाए एवं वर-वधू को समवेत स्वर में उच्चारण करवाए -
''हम दोनों परिजन वर्ग की साक्षी से एक सूत्र में बंधे हैं, अतः इस सम्बन्ध को आजीवन निभायेंगे।''
वर-वधू को परस्पर स्थान परिवर्तन करने का कहें। वर वधू के दायीं ओर बैठे।

संस्कारक द्वारा आशीर्वाद :

तुष्टिरस्तु। पुष्टिरस्तु। वद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। अविघ्नमस्तु। आयुष्यमस्तु। आरोग्यमस्तु। कर्मसिद्धिरस्तु। इष्टसम्पत्तिरस्तु। पापानि शाम्यन्तु पुण्यंवर्धताम्। श्रीः वर्धताम्। कुलगोत्रे चाभिवर्धेताम्। स्वस्ति भद्रं चास्तु।

संस्कारक वर एवं वधू पक्ष के प्रमुख व्यक्तियों को मंच पर आमंत्रित कर वैवाहिक प्रमाणीकरण पत्रक की एक-एक प्रति उन्हें भेंट करें एवं शेष दो प्रतियाँ संस्कारक स्वयं के रेकार्ड के लिए एवं अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के केन्द्रीय कार्यालय में रजिस्ट्रेशन हेतु प्रेषित करने के लिए रख लें।

नव दम्पति अभिभावकों एवं समागत परिजनों का अभिवादन करके आशीर्वाद प्राप्त करें। आशीर्वाद-प्रदान कार्यक्रम के पश्चात् महिलाएं विदाई गीत-संख्या १० (देखें परिशिष्ट-३) प्रस्तुत करें इस कार्यक्रम के बाद वर-वधू गांव में चारित्रात्माएं हों तो उनसे मंगल पाठ श्रवण कर परिजनों के साथ गह प्रवेश करें।

विदाई :

वर-वधू को विदाई उसी समय या समयानुसार दूसरे दिन दी जा सकती है। वधू का पिता अपनी पुत्री को जो कुछ भी दे उसका दोनों पक्षों की ओर से प्रदर्शन न किया जाए।

महिलाएं स्वागत गीत-संख्या ८ (देखें परिशिष्ट-३) का संगान करें।

`

आचार्यश्री तुलसी द्वारा नवदम्पति के लिए दिशा निर्देश

नवदम्पति पाणिग्रहण के पश्चात् प्रथम बार चारित्रात्माओं के दर्शन करते समय गुरुदेव श्री तुलसी द्वारा निर्दिष्ट इन संकल्पों को ग्रहण करें-

1. *विवाह का लक्ष्य अब्रह्मचर्य की वत्ति को सीमित कर ब्रह्मचर्य की दिशा में विकास करने का बने।*
2. *व्यसन पति और पत्नी के बीच दरार पैदा करते हैं और जीवन की पवित्रता को नष्ट करते हैं, इसलिए जीवन व्यसनमुक्त रहे।*
3. *छलना पूर्ण व्यवहार से परस्पर सन्देह और कटुता बढ़ती है, इसलिए दाम्पत्य जीवन में निश्चल व्यवहार रहे।*

४. आवेश और असहिष्णुता के कारण मन की शांति भंग होती है। शान्तिपूर्ण सहवास का सपना अधूरा रह जाता है। शान्त सहवास के लिए साधना द्वारा सहिष्णुता का विकास किया जाये।

५. उपर्युत्त संकल्प सूत्रों की क्रियान्विति और दढ़ता के लिए, देव, गुरु और धर्म के प्रति निष्ठा का विकास किया जाये।

Birthday

जन्म दिवस पर हर व्यक्ति के मानस में गत वर्ष के सिंहावलोकन के साथ नये वर्ष के लिए प्रगति सूचक नई रेखाएं खींचने की भावना जागत होती है। उस दिन को वह एक उत्सव के रूप में मनाना चाहता है। यह उत्सव संस्कतिपरक हो इसके लिए कुछ बिन्दु हैं :–

१. अपने आराध्य के स्मरण के साथ नये वर्ष का शुभारम्भ करें।
२. आमन्त्रित इष्ट मित्रों का ''जय-जिनेन्द्र'' कहकर स्वागत करें।
३. मंगलकामना गोष्ठी में संस्कारक या अभिभावक पूर्वाभिमुख होकर ''मंगल भावना यंत्र'' को उचित स्थान पर स्थापित करें।
४. थाल के मध्य कुंकुम से ''अर्हम्'' का अंकन करें।
५. पट्ट पर लाल वस्त्र बिछाकर चावल से स्वस्तिक y बनायें और उस व्यक्ति का नाम तथा वर्ष प्रवेश की संख्या ... के साथ 'जन्म दिवस मंगलमय हो' लिखें। इसके बाद–

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतम प्रभुः।
मंगलं स्थूलभद्राद्याः, जैनधर्मो स्तु मंगलम्।।

इस मन्त्रोच्चारण के साथ जिस व्यक्ति का जन्म दिवस है उसके तिलक करें। आगन्तुक व्यक्ति आशीर्वाद के रूप में–

नाणेण दंसणेण य, चरित्तेण तवेण य।
खंतीए मुत्तीए वड्ढमाणो भवाहि य।।

इस पद्य के उच्चारण के साथ उसके मुख से मंगल भावना सूत्रों का पाठ करवाएं–

मंगल भावना

श्री सम्पन्नो हं स्याम्
ह्री सम्पन्नो हं स्याम्
धी सम्पन्नो हं स्याम्
धति सम्पन्नो हं स्याम्
शक्ति सम्पन्नो हं स्याम्
शान्ति सम्पन्नो हं स्याम्
नंदी सम्पन्नो हं स्याम्
तेजः सम्पन्नो हं स्याम्
शुक्ल सम्पन्नो हं स्याम्

इसके बाद अल्पाहार तथा अपने प्रियजनों में उपहार आदि के आदान-प्रदान का क्रम रह सकता है। उसके कुछ प्रकार–

(क) चुनी हुई विशेष पुस्तकों का उपहार।
(ख) संस्कारपरक चित्रों का उपहार।
(ग) जरूरतमंद व्यक्तियों को सहयोग।

(घ) विसर्जन।

अंत में चारित्रात्माओं के पास मंगल पाठ श्रवण कर प्रतिदिन स्वाध्याय जप आदि करने जैसा कोई प्रेरक संकल्प लें।

आवश्यक सामग्री :

१. गुड़, कुंकुम, मोली, चावल, चंवलों की फली, लघु कलश से युक्त थाल का प्रबंध करें।

२. संस्कारक गहस्वामी या निर्दिष्ट प्रमुख व्यक्ति के निम्न मंत्रोच्चारण के साथ तिलक करे एवं हाथ पर मोली बांधे—

(क) उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं।
विसहर-विसनिन्नासं, मंगल-कल्लाण-आवासं।।

(ख) अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितो पि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः।।

३. संस्कारक निम्न मंगल मंत्रों का समुच्चारण करते हुए शिला प्रखण्ड पर कुंकुम से स्वस्तिक y अंकित करे एवं मोली बांधे।

(क) णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।।
एसो पंच णमुक्कारो, सव्व पाव पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।।

(ख) ॐ नमः पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र-पद्मावती-सहिताय विषहर-फुलिंग- मंगलाय ॐ ह्रीं चिंतामणये पार्श्वनाथाय।

(ग) ॐ ह्रीं श्रीं ग्रहश्चन्द्र-सूर्याङ्गारक-बुध-वहस्पति-शुक्र-शनैश्चर- राहूकेतु-सहिताः खेटा जिनपतिपुरतो -वति ष्ठन्तु मम-धन-धान्य-जय-विजय-सुख-सौभाग्य-धति-कीर्ति- शान्ति-तुष्टि-पुष्टि-बुद्धि-लक्ष्मी-धर्मार्थ- कामदाः स्युः स्वाहा।

४. संस्कारक शिलान्यास (नींव का स्थान) स्थल पर गुड़, चावल, कुंकुम आदि मंगल सामग्री रखते हुए गहस्वामी या निर्दिष्ट प्रमुख व्यक्ति के द्वारा शिला प्रखण्ड को नींव में रखवाकर शिलान्यास की प्रक्रिया सम्पन्न करे।

५. संस्कारक द्वारा गहस्वामी के लिए मंगलकामना—
तुष्टिरस्तु। पुष्टिरस्तु। वद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। अविघ्नमस्तु। आयुष्यमस्तु। आरोग्यमस्तु। कर्मसिद्धिरस्तु। इष्ट सम्पत्तिरस्तु। पापानि शाम्यन्तु। पुण्यं वर्धताम्। श्रीः वर्धताम्। कुलगोत्रे चाभिवर्धेताम्। स्वस्ति भद्रं चास्तु।

आवश्यक निर्देश :

१. गुड़, कुमकुम, मोली, चावल, चंवले की फली, लघु कलश से युक्त थाल का प्रबन्ध करें।

२. घर में उचित स्थान पर गहस्वामी एवं गहस्वामिनी को उच्चासन पर पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख बिठाएं। उनके निकट ही संस्कारक का आसन हो।

विधि :

शुभारम्भ मंगलगीत- 'भावभीनी वंदना' के संगान से करें। संस्कारक निम्न मंत्रों का समुच्चारण करें।

(क) नमस्कार महामंत्र

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।।
एसो पंच णमुक्कारो, सव्व पाव पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।।

(ख) मंगल पाठ

अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।
अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
अरहंते सरणं पवज्जामि। सिद्धे सरणं पवज्जामि,
साहू सरणं पवज्जामि, केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि।।

३. संस्कारक निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए गहस्वामी एवं गहस्वामिनी के तिलक करे एवं हाथ के मोली बांधे।

सर्व-मंगल मांगल्यं, सर्वकल्याणकारणं।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयतु शासनम्।।
मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतम प्रभु :।
मंगलं स्थूलभद्राद्याः, जैन धर्मो स्तु मंगलम्।।

घर में किसी पवित्र स्थान पर 'मंगल भावना यंत्र' स्थापित करे।

४. संस्कारक निम्न मंत्रों का उच्चारण करें—

(क) ॐ नमः पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र-पद्मावती-सहिताय विषहर-फुलिंग-मंगलाय ॐ ह्रीं चिंतामणये पार्श्वनाथाय।

(ख) ॐ ह्रीं श्रीं ग्रहाश्चन्द्र-सूर्याङ्गारक-बुध-वहस्पति-शुक्र-शनैश्चर- राहूकेतु-सहिताः खेटा जिनपतिपुरतो वतिष्ठन्तु मम-धन-धान्य-जय-विजय-सुख-सौभाग्य-धति-कीर्ति-शान्ति-तुष्टि-पुष्टि-बुद्धि-लक्ष्मी- धर्मार्थकामदाः स्युः स्वाहा।

५. संस्कारक भवन के मुख्य द्वार पर कुमकुम से स्वस्तिक y शुभ-लाभ, जय जिनेन्द्र एवं जैन संस्कति परक चिन्ह अंकित करें। गहस्वामी एवं गहस्वामिनी को निम्न मंत्रों से आशीर्वाद प्रदान करें एवं गहप्रवेश करवाकर विधि सम्पन्न करें।

तुष्टिरस्तु। पुष्टिरस्तु। वद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। अविघ्नमस्तु। आयुष्यमस्तु। आरोग्यमस्तु। कर्मसिद्धिरस्तु। इष्ट सम्पत्तिरस्तु। पापानि शाम्यन्तु। पुण्यं वर्धताम्। श्रीः वर्धताम्। कुलगोत्रे चाभिवर्धेताम्। स्वस्ति भद्रं चास्तु।

६. मंगल भावना का संगान करें–

श्री सम्पन्नो हं स्याम्
ही सम्पन्नो हं स्याम्
धी सम्पन्नो हं स्याम्
धति सम्पन्नो हं स्याम्
शक्ति सम्पन्नो हं स्याम्
शान्ति सम्पन्नो हं स्याम्
नंदी सम्पन्नो हं स्याम्
तेजः सम्पन्नो हं स्याम्
शुक्ल सम्पन्नो हं स्याम्

Opening Ceremony

आवश्यक निर्देश :

१. गुड़, कुमकुम, मोली, चावल, चंवले की फली, लघु कलश से युक्त थाल का प्रबंध किया जाये।

२. संस्कारक, परिवार प्रमुख एवं शुभारम्भकर्त्ता दोनों के निम्न मंत्रोच्चारण के साथ तिलक करें एवं हाथ पर मोली बांधे।

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः,
समं भान्ति ध्रौव्य-व्यय-जनि-लसन्तो न्तरहिताः।
जगत्-साक्षी मार्ग-प्रकटनपरो भानुरिव यो,
महावीरस्वामी, नयन-पथ-गामी, भवतु मे।।

३. संस्कारक निम्न मंगल मंत्रों का समुच्चारण करते हुए भवन/कार्यालय पर कुमकुम से स्वस्तिक y /शुभ-लाभ/ जय जिनेन्द्र अंकित करें।

(क) णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।।
एसो पंच णमुक्कारो, सव्व पाव पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।।

(ख) ॐनमः पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र-पद्मावती-सहिताय विषहर-फुलिंग-मंगलाय ॐ ह्रीं चिंतामणये पार्श्वनाथाय।

(ग) ॐ ह्रीं श्रीं ग्रहाश्चन्द्र-सूर्याङ्गारक-बुध-वहस्पति-शुक्र - शनैश्चर - राहूकेतु - सहिताः खेटा जिनपतिपुरतो वतिष्ठन्तु मम-धन-धान्य-जय-विजय-सुख-सौभाग्य-धति-कीर्ति-शान्ति-तुष्टि-पुष्टि-बुद्धि- लक्ष्मी-धर्मार्थकामदाः स्युः स्वाहा।

४. संस्कारक शुभारम्भकर्त्ता द्वारा भवन/कार्यालय का मुख्य द्वार खुलवाकर शुभारम्भ करावें, एवं निम्न आशीर्वाद प्रदान करें।

तुष्टिरस्तु। पुष्टिरस्तु। वद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। अविघ्नमस्तु। आयुष्यमस्तु। आरोग्यमस्तु। कर्मसिद्धिरस्तु। इष्ट सम्पत्तिरस्तु। पापानि शाम्यन्तु। पुण्यं वर्धताम्। श्रीः वर्धताम्। कुलगोत्रे चाभिवर्धेताम्। स्वस्ति भद्रं चास्तु।

५. ॐशान्ति या नमस्कार महामन्त्र की ५ मिनट तक सामूहिक धुन के पश्चात् कार्यक्रम सम्पन्न करें।

आवश्यक निर्देश :

१. गुड़, कुमकुम, मोली, चावल, चंवले की फली, लघु कलश से युक्त थाल का प्रबंध करें।

२. अंक लिए जाने वाले बालक/बालिका को व्यवस्थित रूप से उच्चासन पर पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख बिठाएं।

विधि :

१. कार्यक्रम का शुभारम्भ मंगलाचरण से करें।

२. संस्कारक–दत्तक पुत्र/पुत्री के निम्न मंगल मंत्रों के समुच्चारण के साथ मस्तक पर तिलक करे एवं दाहिने हाथ पर मोली बांधे।

सर्व-मंगल-मांगल्यं, सर्व-कल्याणकारणम्।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयतु शासनम्।।

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतम प्रभुः।
मंगलं स्थूलभद्राद्याः जैनधर्मो स्तु मंगलम्।।

३. संस्कारक निम्न मंत्रों का समुच्चारण करें :

ॐह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमो नमः
ॐह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमो नमः
ॐह्रीं श्रीं अर्हं आचार्येभ्यो नमो नमः
ॐह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमो नमः
ॐह्रीं श्रीं अर्हं गौतमस्वामिप्रमुख सर्व साधुभ्यो नमो नमः

४. तत्पश्चात् संस्कारक निम्न प्रस्ताव एवं स्वीकति का उच्चारण करवाए।

(क) अंक आपूर्तक का प्रस्ताव

मैं...........सुपुत्र..........निवासी..........श्रीमान्........................के सुपुत्र/सुपुत्री/चिरंजीव/सुश्री .... को अंक में लेना चाहता हूँ। अतः श्रीमान् से अनुरोध है कि कपया अपने सुपुत्र/सुपुत्री को अंक में देने की स्वीकति प्रदान कर अनुगहीत करें।

(ख) अंक प्रदाता की स्वीकति

मैं.........सुपुत्र...........निवासी......अपने पुत्र चिरंजीव/सुश्री ....को मेरी एवं मेरी पत्नी व मेरे इस पुत्र/पुत्री की सहमति से आज तिथि.........वि.स०.......... तदनुसार दिनांक.................. वार.........दिन/रात्रि.............बजे (स्थान)...... में अपने परिजनों की साक्षी से श्रीमान्.........निवासी..........को दत्तक पुत्र/पुत्री के रूप में अपने सुपुत्र को अंक देने की स्वीकति देता हूँ।

(ग) दत्तक पुत्र/पुत्री की स्वीकति

मैं..........सुपुत्र/सुपुत्री श्रीमान्.............निवासी..................आज तिथि................वि.स०..............तदनुसार दिनांक...........को आप परिजन-वर्ग की साक्षी से यह वादा करता/करती हूँ कि आज से श्रीमान्.............. निवासी..............मेरे माता पिता के रूप में होंगे। मैं जीवन पर्यन्त इस घर की समस्त जिम्मेदारियों का निर्वहन कर्त्तव्य एवं सेवा भाव के साथ करता रहूंगा/रहूंगी।

(घ) संस्कारक द्वारा प्रमाणीकरण

मैं.............सुपुत्र श्री.............निवासी.............श्रीमान्............निवासी.............के सुपुत्र/सुपुत्री/चिरंजीव/सुश्री......................

को श्रीमान्.............निवासी..........के दत्तक पुत्र/पुत्री के रूप में प्रमाणित करता हूँ।

स्थान.............

दिनांक............. *हस्ताक्षर*

समय............. *(संस्कारक)*

साक्ष्य

अंक आपूर्तक	*अंक प्रदायक*
१	*१*
२	*२*

५. *संस्कारक निम्न मंत्रों का समुच्चारण करे–*
   ॐनमो पार्श्वनाथाय धरणेन्द्रपद्मावती सहिताय विषहर फुलिंग- मंगलाय ॐ ह्रीं चिन्तामणये पार्श्वनाथाय।

६. *संस्कारक द्वारा मंगल कामना–*
   तुष्टिरस्तु। पुष्टिरस्तु। वद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। अविघ्नमस्तु। आयुष्यमस्तु। आरोग्यमस्तु। कर्मसिद्धिरस्तु। इष्ट सम्पत्तिरस्तु। पापानि शाम्यन्तु। पुण्यं वर्धताम्। श्रीः वर्धताम्। कुलगोत्रे चाभिवर्धेताम्। स्वस्ति भद्रं चास्तु।

७. *तत्पश्चात् बहिन या कन्या द्वारा आरती के पश्चात् संस्कारक उपस्थित परिजनों के तिलक कर कार्यक्रम को सम्पन्न घोषित करें।*

नोट : *कार्यक्रम से पूर्व संस्कारक यह ध्यान दें कि वैधानिक औपचारिकताएं पूरी हो गईं है या नहीं।*

आवश्यक निर्देश :

१. *गुड़, कुमकुम आदि मंगल सामग्री से सज्जित थाल का प्रबंध करें।*

२. *यात्रा के लिए प्रस्थान करने वाले व्यक्ति के लिए घर में उचित स्थान पर पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख उच्चासन पर बैठने का प्रबन्ध किया जाए।*

३. *घर का प्रमुख व्यक्ति संस्कारक यात्रा के लिए प्रस्थान करने वाले व्यक्ति के निम्न मंत्रों का समुच्चारण करते हुए तिलक करें, हाथ पर मोली बांधे एवं गुड़ से मुंह मीठा कराये।*

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्म-घणमुक्कं।
विसहर-विस-निन्नासं मंगल-कल्लाण-आवासं।।

ॐ ह्रीं श्रीं अ सि आ उ सा नमः।

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतम प्रभुः।
मंगलं स्थूलभद्राद्याः, जैनधर्मो स्तु मंगलम्।।

चइत्ता भारहं भासं, चक्कवट्टी महिड्ढिओ।
संति संतिकरे लोए, पत्तो गइ मणुत्तरं।।

संस्कारक घर का प्रमुख व्यक्ति नमस्कार महामंत्र एवं मंगल पाठ का समुच्चारण करके बहिन के द्वारा आरती करवाकर मंगल कामना करता हुआ यात्रा के लिए विदा करे।

- *सर्वप्रथम दम्पत्ति को उच्चासन पर पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख बिठाया जाये।*
- *दम्पत्ति समवेत स्वर में नमस्कार महामंत्र मे पाँच पदों का उच्चारण करें।*
- *संस्कारक उचित स्थान पद मंगल भावना यंत्र स्थापित करते हुए निम्न मंत्रों का उच्चारण करे –*

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतम प्रभुः।
मंगलं स्थूलभद्राद्याः जैन धर्मो स्तु मंगलम्।।

शिव मस्तु सर्वजगतः, परहित-निरता भवन्तु भूतगणाः।
दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखी भवतु लोकः।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।

- *संस्कारक निम्न पाठ का उच्चारण करते हुए दम्पत्ति के तिलक करे एवं मोली बाँधे –*

धम्मो मंगल मुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो।।

सर्वमंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणम्।
प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयतु शासनम।।

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतम प्रभुः।
मंगलं स्थूलभद्राद्याः, जैन धर्मो स्तु मंगलम्।।

- **नमस्कार महामंत्र**

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमो नमः
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं सिद्धेभ्यो नमो नमः
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्येभ्यो नमो नमः
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमो नमः
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं गौतमस्वामिप्रमुख सर्वसाधुभ्यो नमो नमः
एसो पंच णमुक्कारो, सव्व पावपणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।।

- **मंगल पाठ**

अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।
अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा।
साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
अरहंते सरणं पवज्जामि। सिद्धे सरणं पवज्जामि,
साहू सरणं पवज्जामि, केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि।।

- **शुभ भविष्य के लिए मंगल कामना**

(क) ॐनमः पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र - पद्मावती - सहिताय विषहर-फुलिंग-मंगलाय ॐ ह्रीं चिंतामणये पार्श्वनाथाय।

(ख) ॐ ह्रीं श्रीं ग्रहश्चन्द्र-सूर्याङ्गारक-बुध-वहस्पति-शुक्र-शनैश्चर- राहूकेतु-सहिताः खेटा जिनपतिपुरतो वतिष्ठन्तु मम-धन-धान्य-जय-विजय-सुख-सौभाग्य-धति-कीर्ति-शान्ति-तुष्टि-पुष्टि-बुद्धि-लक्ष्मी- धर्मार्थकामदाः स्युः स्वाहा।

- *दम्पत्ति कुछ संकल्प स्वीकार करे (समवेत स्वर से)*
  - *हम ब्रह्मचर्य की साधना में प्रस्थित होंगे।*
  - *हम व्यसन मुक्त जीवन जीएंगे।*
  - *हम परस्पर छलपूर्ण व्यवहार नहीं करेंगें।*
  - *हम सहिष्णुता का विकास करेंगें।*
  - *हम धर्मोपासना में अधिक समय लगाने का प्रयास करेंगें।*
- *दम्पत्ति परस्पर माल्यार्पण करें।*
- *संस्कारक एवं सभी उपस्थितजन निम्न मंत्रों का सामूहिक उच्चारण करें*

सुख शान्ति मंत्र –
ॐ ह्रीं श्रीं
अ- सि- आ- उ- सा
सर्व विघ्न रोगोपद्रव विनाशनाय

मम गहशान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।

कषाय विजय मंत्र –

एगे जिए जिया पंच, पंच जिए जिया दस।
दसहा उ जिणित्ताणं, सव्व सत्तू जिणामहं।।

लोगस्स का पाठ करें।

मंगल भावना का उच्चारण करें –

श्री सम्पन्नो हं स्याम्
ह्री सम्पन्नो हं स्याम्
धी सम्पन्नो हं स्याम्
धति सम्पन्नो हं स्याम्
शक्ति सम्पन्नो हं स्याम्
शान्ति सम्पन्नो हं स्याम्
नंदी सम्पन्नो हं स्याम्
तेजः सम्पन्नो हं स्याम्
शुक्ल सम्पन्नो हं स्याम्

- *पारिवारिक जनों, इष्ट मित्रों से शुभकामनाएं स्वीकार करें। (पीहर पक्ष की ओर से ओढ़णा/चूनड़ी/पोशाक आदि ओढ़ाई जा सकती है।)*
- **संस्कारक अथवा परिवार प्रमुख द्वारा आशिर्वाद**

  तुष्टिरस्तु। पुष्टिरस्तु। वद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। अविघ्नमस्तु। आयुष्यमस्तु। आरोग्यमस्तु। कर्मसिद्धिरस्तु। इष्टसम्पत्तिरस्तु। पुण्यंवर्धताम्। श्रीः वर्धताम्। कुलगोत्रे चाभिवर्धेताम्। स्वस्ति भद्रं चास्तु।

- *सर्वप्रथम तपस्वी भाई/बहिन को उच्चासन पर बिठाया जाए।*
- *कन्याएं/महिलाएं "वंदना आनन्द पुलकित विनय नत हो मैं करूं" (परिशिष्ट-) गीतिका के संगान से कार्यक्रम का शुभारम्भ करें।*
- *पारणे से पूर्व तपस्वी भाई/बहिन नमस्कार महामंत्र का उच्चारण करें।*
- *यथासम्भव परिवार के सबसे छोटे सदस्य पौत्र/पौत्री/पुत्र/पुत्री के हाथ से पारणे के लायक पेय पदार्थ का पान करके तपस्वी पारणे की रस्म पूरी करे।*
- *कार्यक्रम में उपस्थित जन तपस्वी के गुणों पर प्रकाश डालकर तप की अनुमोदना करें। इस क्रम में स्थानीय संस्थाओं के प्रतिनिधियों को प्राथमिकता दें। तदनन्तर इष्ट परिजन, मित्र मण्डल आदि को अवसर दें।*
- *तपस्या के पारणे के अवसर पर उपहार देना हो तो सिर्फ धार्मिक साहित्य एवं धर्मोपकरण ही दें।*
- *मंगल पाठ का समवेत स्वर में उच्चारण करें।*
- *परिवार के वरिष्ठ सदस्य आगन्तुकों के प्रति कतज्ञता ज्ञापित करें।*
- *ग्राम/शहर में चारित्रात्माएं विराज रही हों तो उन्हें विनम्र प्रार्थना कर पधारने का निवेदन करें एवं पारणे से पूर्व यथासम्भव अपने हाथ से पात्र दान देकर स्वयं में सार्थकता का अनुभव करें।*

अनशन की पूर्व भूमिका को संलेखणा कहते है। संलेखणा से आत्मा को शुद्ध करने के पश्चात् शारीरिक क्षमता व मनोबल देखकर संथारा (अनशन) किया जाता है। संथारा दो प्रकार का होता है :–

१. सागारी (थोड़े काल के लिए)

२. यावज्जीवन (पूर्ण जीवन के लिए)

सागारी संथारा :

जब कोई अचानक संकट काल आ जाए या बीमारी आदि की भयंकरता हो, उस समय सागारी संथारा किया जाता है। रात को सोते समय भी प्रातःकाल उठने तक सागारी संथारा किया जाता है। इसके लिए निम्न विधि का उपयोग कर सकते हैं।

आहार, शरीर उपधि, पचखूं पाप अठार।
मरण पाऊं तो वोसिरे, जीऊं तो आगार।।

यावज्जीवन संथारा :

देह शक्ति क्षीण होती देखकर या आयुष्य निकट आया जानकर साधु, साध्वी या श्रावक, श्राविका की साक्षी से किया जाता है। पूर्वाभिमुख होकर या जिस दिशा में आचार्य देव विराजमान हों, उस दिशा में वन्दना करके यथाशक्ति, तिविहार, चौविहार प्रत्याख्यान कर संथारा करना चाहिए।

अनशन पाठ :

मैं अरिहन्त देव, गुरु एवं धर्म की साक्षी से यावज्जीवन तीन/चार आहार का त्याग करता/करती हूँ।

अनशन काल में ध्यान देने योग्य बातें :

१. ग्रहण किए हुए व्रतों में जान या अनजान में हुई भूलों के लिए सरल भाव से आलोचना करना।
२. साधु-साध्वियों के प्रति मानसिक, वाचिक एवं कायिक रूप में हुई आशातना के लिए क्षमा-याचना करना।
३. चौरासी लाख जीवयोनी तथा जिनके साथ कटु व्यवहार हुआ हो उनसे व्यक्तिगत खमत खामणा करना। (खमाए बिना मरने वाला विराधक माना गया है)
४. प्राणातिपात (हिंसा-झूठ) आदि अठारह पापों का यथाशक्ति त्याग करना।
५. देव, गुरु, धर्म रूप त्रिशरण को बार-बार दोहराना।
६. अतीत जन्मों में कत पापों की आलोचना करना।
७. अपने द्वारा किये गये सुकत कर्मों की अनुमोदना करना।
८. सद्भाव एवं समता में रमण करना। अन्तिम समय की घोर वेदना में भगवान महावीर, राजर्षि सनतकुमार, स्कन्दक, गजसुकुमाल आदि संतों की सहनशीलता स्मरण करते हुए परिणामों को सुदढ़ रखना।
९. अनशन करने के बाद ''नमस्कार महामंत्र'' का जप तथा दस प्रकार की आराधना करते-करते समाधि मरण प्राप्त करना।

- आत्म-पवित्रता के लिए जो किया है, वास्तव में वहीं अनशन है।
- अनशन वास्तव में मत्यु को जानने की सच्ची कला है।
- विवेकपूर्ण शरीर छोड़ने की प्रक्रिया का नाम है – अनशन
- अनशन आत्महत्या नहीं, मौत का मुकाबला है।

- आचार्य तुलसी

१. प्राणांत के बाद एक मुहूर्त तक देह को स्थानान्तरित न किया जाय और इस काल में पार्थिव-शरीर के आसपास विशेष शान्ति बनाए रखें।

२. प्राणांत के एक मुहूर्त के बाद नमस्कार महामंत्र की मंगल धुन के साथ द्रव्य शरीर को अगले कार्यक्रम के लिए स्थानान्तरित किया जाए।

मंगल धुन

ॐणमो अरहंताणं, ॐणमो श्री सिद्धाणं,
ॐणमो आयरियाणं, ॐणमो उवज्झायाणं
ॐणमो सव्वसाहूणं।

३. इसके साथ ही शोकाकुल गह के वातावरण को आध्यात्मिक बनाने के लिए वैराग्यपरक गीतों का संगान चालू रखें।

४. शुद्धि के पश्चात् मतक को नए अथवा साफ वस्त्र पहनाएं और दाह संस्कार की सामग्री के साथ अर्थी को तैयार रखें।

५. मतक की देह पर आटे का पिंड, पैसा आदि न रखें।

६. शव को अर्थी पर रखकर सफेद अथवा लाल वस्त्र से आवत करें। सभी लोग पार्थिव शरीर के चारों ओर मौन ध्यानस्थ खड़े हों और एक व्यक्ति दीर्घ स्वर में निम्न मंत्र पद उच्चारित करे–

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मत्थियरे जिणे।
अरहंते कित्तइस्सं, चउव्वीसंपि केवली।।
उसभमजियं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि।।
कुंथं अरं च मल्लिं वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च।।
एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा।
चउव्वीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु।
कित्तिय वंदिय मए, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।।
आरोग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागर-वर गंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।।

७. शव-यात्रा के समय प्रथा रूप में न रोया जाय, बांग न दी जाए, न छाती आदि पीटी जाए।

८. रास्ते में वैराग्य परक गीतिकाओं का संगान अथवा निम्न घोषों का उच्चारण किया जाए-

(क) सत्य है अरिहन्त नाम, सदा यही आयेगा काम

(ख) अमर नहीं कोई प्राणी, महावीर की यह वाणी

(ग) आने वाला जाता है, नश्वर जग का नाता है

(घ) मंगल ध्वनि ....ॐ णमो अरहंताणं............

९. विश्राम की आवश्यकता हो तो रास्ते में रुका जा सकता है किंतु वहां अन्न-पानी आदि न बिखेरे।

१०. श्मशान स्थल पर भी दाह क्रिया की तैयारी के समय वैराग्यमय गीतिकाओं का दौर चलाया जाए।

११. दाह संस्कार से पूर्व एक बार पुनः 'लोगस्स' का उच्चारण करें।

१२. चिता दहन के समय सभी लोग चिता के चारों ओर खड़े होकर करबद्ध तीन बार उच्चारण करें–

अरहंते सरणं पवज्जामि

सिद्धे सरणं पवज्जामि

साहू सरणं पवज्जामि

केवलि-पण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि

और इसके साथ परिवार का प्रमुख अथवा मतक का उत्तराधिकारी चिता को प्रज्वलित करें।

१३. मतक के कफन के टुकड़ों को वापस घर न लाया जाए।

१४. गांव में साधु-साध्वियां हों तो दाह संस्कार के पश्चात् मतक के परिवार वाले शरीर-शुद्धि करके यथासंभव सब मिलकर उनके दर्शन करें। यदि साधु-साध्वियां न हों तो घर पर ही सब मिलकर 'लोगस्स' का ध्यान करें।

१५. मतक के घर दी जाने वाली रसोई (भोजन सामग्री) में मिष्टान न दिया जाये। यदि अधिक घरों से रसोई आने की सम्भावना हो तो पहले से ही उन्हें सूचित कर दें।

१६. मतक के पीछे रूढ़ परम्पराओं को प्रश्रय न दिया जाए।

जैसे–

(क) कागोल करना

(ख) फूल डालना

(ग) जौ, तिल आदि जलाना

(घ) पथवारी सींचना

(ड़) संवेदना प्रकट करने वाले के समक्ष पानी का लोटा रखना।

१७. मतक के पीछे किसी प्रकार का भोज आदि न करें और हांती (मिठाई) न बांटे।

१८. मतक के पीछे जुहारी, मिलनी, सलामी आदि परम्पराओं को प्रश्रय न दें।

१९. विधवा के साथ किसी प्रकार की उपेक्षा या तिरस्कार पूर्ण व्यवहार न करें।

२०. शोक-बैठक और पोतिया, चद्दर आदि शोक चिन्हों को सात दिन से अधिक न रखें। संभव हो तो गुरु-दर्शन कर संबल प्राप्त करें।

२१. शोक-संपन्नता के समय आध्यात्मिक अनुष्ठान किए जाएं।

जैसे–

(क) परमेष्ठी वंदना,

(ख) जप ॐ णमो अरहंताणं (धुन), ॐअर्हम्।

(ग) वैराग्यवर्धक गीतिकाएं * एवं बारह भावना के दोहे (परिशिष्ट-४)

(घ) मतक के गुणों की स्मति।

(ड़) ध्यान (लोगस्स का)

(च) मंगल पाठ

२२. देहावसान सूचना पत्र उसी दिन या अगले दिन सुविधानुसार प्रेषित किया जा सकता है। एकरूपता और सुविधा की दष्टि से देहावसान सूचना पत्र का एक प्रारूप यहां प्रस्तुत किया जा रहा है–

*

○ तू आयो है एकलो भाई !

○ जगत सपने री माया रे !

○ अपणी भूल सुधारूं मैं !

- *अमत कलश, भाग-२ चषक प.४१३-४१५*

स्मति संवेदना पत्र
(प्रारूप)

मान्यवर,

असीम संवेदना और भारी हृदय से आपश्री को सूचित कर रहे हैं कि हमारे .... का दिनांक ....को देहावसान हो गया है। यह प्रसंग हमारे लिए संसार की अनित्यता का साकार अनुभव कराने वाला है। देव, गुरु और धर्म के सहारे ही हम इस वज्रपात को झेलने का प्रयत्न कर रहे हैं।

पूज्यवरों की दष्टि है कि ऐसे प्रसंगों पर आर्तध्यान कम किया जाये, उसे बहुमान देते हुए दिनांक .... को दिवंगत आत्मा के गुणों की स्मति के साथ मात्र .... दिन में सभी प्रकार के शोक सम्पन्न कर दिये जाएंगे। अतः आप पत्र द्वारा संवेदना प्रेषित कर हमें सम्बल प्रदान करने की कपा करें।

विनम्र

....

पता... ....

....

....

दूरभाष ....

प्राणांत के एक मुहूर्त बाद गहस्थों को संभलाते समय मंगल धुन–
ॐ नमो अरहंताणं
वैराग्यपरक गीत– (परिशिष्ट सं०-५)
बैकुंठी पर रखते समय सभी व्यक्ति चारों और मौन खड़े हों और एक व्यक्ति दीर्घ स्वर में उच्चारण करे–

* *लोगस्स .... पूरा पाठ*
* *मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतम प्रभुः*
  मंगलं स्थूलभद्राद्याः, जैन धर्मोस्तु मंगलम्
  मंगलं मतिमान् भिक्षुः, मंगलम् भारमल्लकः
  मंगलं रायचन्द्राद्याः, मंगलम् तुलसी गुरुः
  महाप्रज्ञोस्तु मंगलम्, तेरापंथोस्तु मंगलम्
* *रास्ते में-वैराग्य परक गीत–*

घोष

* *मंगल ध्वनि*
* *महावीर बोलो भाई महावीर बोलो*
* *चिता दहन से पूर्व - लोगस्स, उवसग्गहरं पाठ*
* *चिता दहन के समय चारों और सभी खड़े होकर करबद्ध तीन बार-सरण सूत्र का उच्चारण करें।*

अरहंते सरणं पव्वज्जामि .....
जय मंगल धुन-ॐणमो अरंहताणं

(निर्देशक बिन्दु)

- *'ॐ णमो अरहंताणं' की मंगल ध्वनि से वातावरण को भावित करें।*
- *किसी भी प्रकार की रूढ़ प्रथाओं को किंचित भी प्रश्रय न दें।*
- *पार्थिव शरीर को अपनी वेश परम्परा के अनुरूप तैयार कर उसे बैकुंठी पर रखते समय सभी पारिवारिकजन, मित्रजन एवं समाज के व्यक्ति चारों और मौन खड़े होकर दीर्घ स्वर में निम्न उच्चारण करें–*
  - *नमस्कार महामंत्र का समवेत स्वर में उच्चारण किया जाए।*
  - *लोगस्स का पूरा पाठ पढ़ें।*
  - *मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतम प्रभुः।*
मंगलं स्थूलभद्राद्याः, जैन धर्मोस्तु मंगलम्।।
मंगलं मतिमान् भिक्षुः, मंगलं भारमल्लकः,
मंगलं रायचन्द्राद्याः, मंगलं तुलसी गुरुः।
महाप्रज्ञोस्तु मंगलं, तेरापंथोस्तु मंगलं।।
  - *ॐ अर्हम्, सुगुरु शरणं, विघ्न हरणं, मिटे मरणं,*
सहज हो मन, जगे चेतन, करें दर्शन स्वयं के हम।
बने अर्हम्, बने अर्हम्, बने अर्हम्, बने अर्हम्।।
- *बैकुंठी लेकर प्रस्थान करते समय बोलें –*
अरिहंत नाम सत्य है – सत्य बोले गत है।
- *रास्ते में जय घोष, मंगल ध्वनि एवं वैराग्य वर्धक गीतिकाओं का संगान किया जा सकता है।*
- *बैकुंठी को चिता पर रखने से पूर्व – लोगस्स का पाठ, उवसग्गहरं का पाठ सुविधानुसार किया जा सकता है।*
- *चिता दहन के समय सभी व्यक्ति करबद्ध होकर तीन बार शरण सूत्रों का उच्चारण करें –*
– अरहंते सरणं पवज्जामि ....
– ॐ णमो अरहंताणं की मंगल धुन
- *दाह संस्कार की सम्पन्नता के पश्चात् सभी पारिवारिकजन स्नान आदि सम्पन्न कर वहाँ विराजित चरित्र आत्माओं के दर्शन करें।*
- *शोक सम्पन्नता कम से कम समय में करके गुरुदर्शन के लिए प्रस्तुत हों। वैसे संथारे की मत्यु को तो हर स्थिति में अशोक मानकर उसे सम्मान दें।*
- *स्मति सभा का आयोजन कर शोक सम्पन्नता के साथ दिवंगत आत्मा के गुणों की चर्चा कर उनके प्रति श्रद्धांजलि समर्पित करें। स्मति सभा क्षेत्रीय सुविधानुसार स्थान पर रखें।*

(प्रारूप)

- *नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ शुभारम्भ करें –*

  णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
  णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं ।।

- *आत्मा भिन्न, शरीर भिन्न है तुमने मंत्र पढ़ाया,*
  आत्मा अचल अरुज शिव शाश्वत, नश्वर है यह काया।
  आत्मा आत्मा के द्वारा ही आत्मा में लय पाए।।
  चैत्य पुरुष जग जाए - २

- *बारह भावना के दोहे (देखें परिशिष्ट संख्या-४)*

- *दिवंगत आत्मा के गुणों का स्मरण (समयानुसार)*

  – स्थानीय संस्थाओं को प्राथमिकता दें।

  – विशिष्ट जनों को अवसर दें।

  – परिवार के वरिष्ठ व्यक्तियों को अवसर दें।

  – परिवार के सदस्य कतज्ञता ज्ञापन करें।

- *लोगस्स का सामूहिक पाठ किया जाए।*

- *शरण सूत्रों के उच्चारण के साथ स्मति सभा को सम्पन्न करें –*
  अरहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि।।
  साहू सरणं पवज्जामि, केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि।

१

नामकरण से सम्बन्धित तथ्य

नामकरण के लिए जन्म नक्षत्र और जन्म राशि को आधार माना जाता है। नक्षत्र और राशियों के लिए कुछ अक्षर निर्धारित हैं उन्हीं अक्षरों में से किसी एक अक्षर को आदि मानकर नामकरण किया जाता है। नक्षत्र २७ व राशियां १२ हैं। प्रत्येक नक्षत्र के लिए चार-चार अक्षर और राशि के लिए नव-नव अक्षरों का विधान है, जो इस प्रकार हैं।

नोट : *नक्षत्रों के आगे उल्लिखित अक्षरों में कई स्थानों पर ह्रस्व का प्रयोग है जैसे-अ उ क प ह ग च आदि और कई स्थानों पर दीर्घ का प्रयोग है जैसे-ई मा टा रा ना या आदि तथा कई जगह एक अक्षर का ही प्रयोग है- जैसे फा डा आदि। इसके लिए यह विधि है कि जहां ह्रस्व जैसे-ई केस्थान पर इ आदि को लिया जाता है। वहां एक ही अक्षर है वहां सारी मात्राओं का ग्रहण करें जैसे – फा के स्थान पर फी फू फे आदि।*

नक्षत्र	***राशि***	***अक्षर***
अश्विनी	*मेष*	*चू, चे चो, ला*
भरणी	*मेष*	*ली, लु ले, लो*
कतिका	*मेष*	*अ*
कतिका	*वषभ*	*ई, उ, ए*
रोहिणी	*वषभ*	*ओ, वा, वी, वू*
मगशीर्ष	*वषभ*	*वे, वो*
मगशीर्ष	*मिथुन*	*क, की*
आर्द्रा	*मिथुन*	*कू, घ, ङ, छ*
पुनर्वसु	*मिथुन*	*के, को, ह*
नक्षत्र	***राशि***	***अक्षर***
पुनर्वसु	*कर्क*	*ही*
पुष्य	*कर्क*	*हु, हे, हो, डा*
अश्लेषा	*कर्क*	*डी, डु, डे, डो*
मघा	*सिंह*	*मा, मी, मू, मे*
पूर्वाफाल्गुनी	*सिंह*	*मो, टा, टी, टू*
उत्तराफाल्गुनी	*सिंह*	*टे*
उत्तराफाल्गुनी	*कन्या*	*टो, प, पी*
हस्त	*कन्या*	*पू, ष, ण, ठ*
चित्रा	*कन्या*	*पे, पो*
चित्रा	*तुला*	*रा, री*
स्वाति	*तुला*	*रू, रे, रो, ता*
विशाखा	*तुला*	*ती, तू, ते*
विशाखा	*वश्चिक*	*तो*
अनुराधा	*वश्चिक*	*ना, नी, नू, ने*

ज्येष्ठा	वश्चिक	नो, या, यी, यू
मूला	धन	ये, यो ,भ, भी
पूर्वाषाढा	धन	भू, धा, फा, ढा
उत्तराषाढा	धन	भे
उत्तराषाढा	मकर	भो, जा, जी
श्रवण	मकर	खी, खू, खे, खो
धनिष्ठा	मकर	ग, गी
धनिष्ठा	कुम्भ	गू, गे
शतिभिषा	कुम्भ	गो, सा, सी, सू
पूर्वाभाद्रपद	कुम्भ	से, सो, द
पूर्वाभाद्रपद	मीन	दि
उत्तराभाद्रपद	मीन	दू, थ, झ, ञ
रेवती	मीन	दे, दो, च, ची

संस्कतिपरक, गुणपरक और अर्थपरक नामों की लघु सूची

- अरिहंत, अभिनन्दन, अनन्त, अतिमुक्त, अभिलेख, अभय। अमता, अचला, अनुपमा, अहिंसा, अर्हत् प्रभा, अखिलेश, अमित, अर्हम्, अर्पित।
- आर्द्र कुमार, आनन्द, आदर्श, आलोक, आशीष, आराधना, आस्था, आयुष्मती, आज्ञा, आयुष्य।
- इन्द्रभूमि, इलाकुमार, इन्द्रजीत, इन्द्रयानी, इलाकुमारी।
- उदयकुमार, उदित, उज्ज्वल, उद्योत, उमास्वाति, उन्मेष, उदयश्री, उज्ज्वला, उत्तरा, उर्मिला, उदिता।
- अंशुकुमार, अंगद, अंकुश, अंजना, अंकेश्वरी, अंजलि, अंकित।
- कुमारपाल, कीर्तिधर, कुमुदचन्द्र, कौशल, कुमारश्रमण, कमलावती, कुन्ती, कौशल्या, करुणा, कुलवती, कविता, कुमुदिनी, कला, कल्पना, किरण, कुसुम, कनक।
- गुणवर्धन, गुणशील, गौतम, गौरव, गुणाकर, गुंजन, गुणश्री, गरिमा, गुप्तिप्रभा, गुणावली, गीतप्रिया।
- चन्द्रप्रभ, चन्द्रानन, चित्रभानु, चिरंजीव, चन्द्रकांत, चन्द्रेश, चिन्मय, चन्दनबाला, चेलना, चारुमती, चित्ररेखा, चकिता, चेतना।
- जिनचन्द, जिनमित्र, जम्बूकुमार, जिनपाल, जयन्तकुमार, जयपाल, जयन्ती, जिनरेखा, जया, जागति, जिनप्रभा, जिज्ञासा।
- तरुणकुमार, तिष्यगुप्त, तत्त्वसेन, तारकचन्द, तत्त्वरूचि, तितिक्षा, तारामती, तप्ति, तरणी।
- दर्शनकुमार, दिवाकर, दिनकर, दिव्य, दमयन्ती, दिव्यमती, दयावती, दीप्ति, दिव्या, देशना, दया।
- धर्मसेन, धन्यकुमार, धनंजय, धीरकुमार, धर्मपाल, धीरज, धारिणी, धर्मवती, धन्यश्री, धति।
- नंदीवर्धन, नंदीघोष, नेमीकुमार, नयकुमार, नवनीत, नीरज, निकेतन, नीलेश, नीतिश्री, निर्मला, निर्जरा, नलिनी, नयना, नीलिमा, नीति, निश्चला, निष्ठा।
- पुष्पदन्त, पवनकुमार, पद्मसेन, प्रसेनजीत, प्रियंकर, प्रेरित, पीयूष, पद्म, प्रतीक, प्रफुल्ल, प्रेरणा, प्रेक्षा, प्रिया, प्रभावती, पद्मावती, प्रज्ञावती, पुष्पचूला, पूर्णिमा, प्रीति, प्रतिज्ञा, प्रज्ञा, प्रभा, पल्लवी, पताका, पुष्पलता।
- बोधकुमार, बन्धुगुप्त, बसन्त, बाहुबली, बुद्धिमती, ब्राह्मी।
- भरतकुमार, भद्रबाहु, भामंडल, भद्रगुप्त, भद्रावती, भाग्यवती, भानुमती, भावना, भक्तिमती।
- मलयगिरी, महावीर, महासेन, मणिभद्र, मानतुंग, मकरन्द, मत्युंजय, मनस्वी, मिलन, मयूख, मयूरी, मदनरेखा, ममता, मरुदेवी, मंजुमती, मंजरी, मनीषा, मेधा, मालविका मुदिता।
- यशोभद्र, युगन्धर, योगेश, यशोविजय, यशस्वी, यौगिक, यशपाल, यशोधरा, यशोमति, यशस्वती, यामिनी, योगा।
- ऋषभकुमार, रत्नकुमार, रजत, रश्मि, रत्नसेन, रोहित, राजीमती, रक्षिता, रोहिणी, रजनी, रचना, राजुल, रसना, रागिनी, राजश्री।
- लोकेश, लाभेश, लयलीन, लब्धिश्री, लघिमा, लता, लाभवती, ललिता, लावण्यवती, लोकप्रभा।

- *वर्धमान, विचक्षण, विभूति, विजय, विनयचन्द, विश्वास, विदित, विश्रुत, विनयश्री, वसुमती, वन्दना, विज्ञानश्री, विजया, वैशाली, विज्ञा, विश्रुता।*
- *शान्तिप्रिय, श्रेणिक, शय्यंभव, श्रेयांस, शालीभद्र, श्रेयस, शीलवती, शिवा, शीला, सुषमा, शारदा, शालिनी।*
- *सिद्धसेन, सुमित, सिद्धार्थ, सुगुप्त, सुघोष, स्मित, सत्यप्रभ, समता, सन्मति, शीतल, सुबाहु, सुविधा, सुभद्रा, सुलसा, सुकौशल, सुन्दरी, साधना, सिद्धा, सुयस, सुमन, संयम।*
- *हेमचन्द्र, हेमन्त, हिमगिरि, हृदयेश, हंसमुख, हिमांशु, हिमा, हेमवती, हिमानी, हृदया।*
- *क्षेमचन्द्र, क्षेमंकर, क्षमापति, क्षीरकंठ, क्षमाश्री, क्षितिप्रभा, क्षिति, क्षमा।*
- *त्रिभुवनकीर्ति, त्रिगुप्त, त्रिशला, त्रिवेणी।*
- *ज्ञानचन्द, ज्ञानेश, ज्ञानवती।*

२

मांगलिक दिवस (अपूछ सावा)

चैत्र	*कष्णा ४*	*-भगवान पार्श्व केवल ज्ञान-दिवस*
चैत्र	*कष्णा ८*	*-भगवान ऋषभ जन्म एवं दीक्षा-दिवस*
चैत्र	*शुक्ला ११*	*-भगवान सुमति केवल ज्ञान-दिवस*
चैत्र	*शुक्ला १३*	*-भगवान महावीर जयन्ती*
चैत्र	*शुक्ला १५*	*-भगवान पद्म केवल ज्ञान-दिवस*
बैशाख	*कष्णा ५*	*-भगवान कुंथु दीक्षा-दिवस*
बैशाख	*कष्णा १३*	*-भगवान अनन्त जन्म-दिवस*
बैशाख	*शुक्ला ३*	*-अक्षय ततीया*
		(भगवान ऋषभ का वर्षी तप पारणा)
बैशाख	*शुक्ला १०*	*-भगवान महावीर केवल ज्ञान-दिवस*
ज्येष्ठ	*कष्णा ८*	*-भगवान मुनिसुव्रत जन्म-दिवस*
ज्येष्ठ	*कष्णा १३*	*-भगवान शान्ति जन्म-दिवस*
ज्येष्ठ	*शुक्ला १३*	*-भगवान सुपार्श्व दीक्षा दिवस*
आषाढ़	*कष्णा ७*	*-भगवान विमल निर्वाण-दिवस*
आषाढ़	*शुक्ला ८*	*-भगवान अरिष्टनेमि निर्वाण-दिवस*
मिगसर	*कष्णा ५*	*-भगवान सुविधि जन्म-दिवस*
मिगसर	*कष्णा ६*	*-भगवान सुविधि दीक्षा-दिवस*
मिगसर	*शुक्ला ११*	*-भगवान नेमिनाथ केवल ज्ञान-दिवस*
मिगसर	*शुक्ला १५*	*-भगवान संभव दीक्षा-दिवस*
पौष	*कष्णा १०*	*-भगवान पार्श्व जन्म-दिवस*
पौष	*कष्णा १३*	*-भगवान चन्द्रप्रभ दीक्षा-दिवस*
पौष	*शुक्ला ११*	*-भगवान अजित केवल ज्ञान-दिवस*
माघ	*कष्णा १२*	*-भगवान शीतल दीक्षा-दिवस*
माघ	*शुक्ला २*	*-भगवान शीतल केवल ज्ञान-दिवस*
माघ	*शुक्ला ५*	*-वसंत पंचती*
माघ	*शुक्ला १३*	*-भगवान धर्म दीक्षा-दिवस*
फाल्गुन	*कष्णा ७*	*-भगवान चन्द्र केवल ज्ञान-दिवस*
फाल्गुन	*कष्णा ११*	*-भगवान ऋषभ केवल ज्ञान-दिवस*

फाल्गुन	कष्णा १३	-भगवान श्रेयांस दीक्षा-दिवस

चतुर्मास के शुभ दिन

श्रावण	कष्णा ८	-भगवान नेमिनाथ जन्म-दिवस
श्रावण	कष्णा ६	-भगवान नेमिनाथ दीक्षा-दिवस
श्रावण	शुक्ला ५	-भगवान अरिष्टनेमि जन्म-दिवस
श्रावण	शुक्ला ६	-भगवान अरिष्टनेमि दीक्षा-दिवस
भाद्रव	शुक्ला ६	-भगवान सुविधि निर्वाण-दिवस
कार्तिक	कष्णा ५	-भगवान संभव केवल ज्ञान-दिवस
कार्तिक	कष्णा १२	-भगवान पद्म जन्म-दिवस
कार्तिक	कष्णा १३	-भगवान पद्म दीक्षा-दिवस
कार्तिक	कष्णा १५	-भगवान महावीर निर्वाण-दिवस (दीपावली)
कार्तिक	शुक्ला ३	-भगवान सुविधि केवल ज्ञान-दिवस
कार्तिक	शुक्ला १२	-भगवान अर केवल ज्ञान-दिवस

३

१—मंगलगीत

(धुन-जल्ला मारू)

१. *सिंवरां थांरो विघन विनाशक नाम घणो सुखकारी हो*
जगतारी आदिनाथ
शुभकारी आदिनाथ
ऋषभ जिनेश्वर पैला जग अवतारी हो जिणन्द।।

२. *प्रभुजी थे तो असि मसि कषि रा पैला पाठ पढाया हो*
मन भाया जिनराज
विकसाया जिनराज
भरम मिटाया, करम धरम समझाया हो जिणन्द।।

३. *जिनजी थांरै हाथां स्यूं गज रा कारज सब सरिया हो*
हरिया भरिया जिनराज
गुण दरिया जिनराज
जगत उद्धारण तारण थे अवतरिया हो जिणन्द।।

४. *जिनजी थांरो नांव लियां स्यूं रोम-रोम हरषावै हो*
सरसावै मन काय
दुःख दरद नसाय
सुमिरण करतां अघदळ दूर पलावै हो जिणन्द।।

५. *हरख चाव स्यूं मंगल निशिदिन चावां हो*
नित ध्यावां जिनराज
होवे सफल सुकाज
रहज्यो सुख कुल कीरत सदा सवाई हो जिणन्द।।

रचना : *श्रीमती कमला भादानी*

२–विनायक

(धुन - गढ़ रणत भंवर सूं आयो विनायक)

१. बन्दू बे कर जोड़ी नै पैला तीर्थंकर, ऋषभ जिनेश्वर नाम सुहावणो।
ओ तो है अघनाशक विघन विनाशक, मंगल हरख बधावणो।।

२. दीपै समवसरण में दूजा तीर्थंकर, अजित जिनेश्वर नाम सुहावणो।
ओ तो मंगलकारक है सुखदायक जीत फतै करावणो।।

३. बन्दू बे कर जोड़ी नै तीजा तीर्थंकर, संभव नाम सुहावणो।
इणस्यूं सब सुख सम्पत संभव होवै, कारज सिद्ध करावणो।।

४. दीपै समवसरण में चौथा तीर्थंकर, अभिनन्दन नाम सुहावणो।
इणनै जो कोई ध्यावै, बांछित पावै, मान सम्मान बढावणो।

५. बन्दू बे कर जोड़ी नै पांचवां तीर्थंकर, सुमति नाम सुहावणो।
ओ तो सुमति बधावण कुमति निवारण, ज्ञान उजास उजारणो।।

६. दीपै समवसरण में छट्ठा तीर्थंकर, पद्म सुनाम सुहावणो।
ओ तो खुशियाँ बधावै, मन हरषावै, हृदय कमल विकसावणो।।

७. बन्दू बे कर जोड़ी नै सातवां तीर्थंकर, नाम सुपास सुहावणो।
दुरजन दूर पलावै सज्जन भेंट करावै, सुजस सम्मान बधावणो।।

८. दीपै समवसरण में आठवां तीर्थंकर, चन्द्रा प्रभुजी नाम सुहावणो।
उजलै पख री कला ज्यूं, बधतो ही जावै सुख सिद्धि विस्तारणो।।

९. बन्दू बे कर जोड़ी नै नौवां तीर्थंकर, सुविधि सुनाम सुहावणो।
ज्यांरा विधिवत नाम जप्यां सुख होवै, कारज सुफल करावणो।।

१०. दीपै समवसरण में दसवां तीर्थंकर, शीतल नाम सुहावणो।
ओ तो तप्त निवारण, शान्ति बधारण शीतलता विस्तारणो।।

११. बन्दू बे कर जोड़ी नै इग्यारमा तीर्थंकर, श्रेयांस नाम सुहावणो।
ओ तो पातक नाशक विघन विनाशक, सुजस श्रेय दिरावणो।

१२. बन्दू बारहवां वासुपूज्य तीर्थंकर, पूज्य सुनाम सुहावणो।
ज्यांरो नाम लियां दुख दूर पलावै, सुफल हुवै मन भावणो।।

१३. बन्दू बे कर जोड़ी नै तेरवां तीर्थंकर, विमल प्रभुजी नाम सुहावणो।
ज्यांरो नाम जप्यां मन निर्मल होवै, लाभ मिले मन भावणो।।

१४. दीपै समवसरण में चवदमा तीर्थंकर, अनन्त प्रभुजी नाम सुहावणो।
ज्यांरो नाम जप्यां सुख रो अंत न आवै, निश्चित हरख बधावणो।।

१५. दीपै समवसरण में पनरमा तीर्थंकर, धरम प्रभुजीनाम सुहावणो।
होवै धरम जठै, होवै विजय बठै ही, कदेय न धरम विसारणो।।

१६. बन्दू बे कर जोड़ी नै सोलवां तीर्थंकर, शांति प्रभुजी नाम सुहावणो।
ओ तो नाम उद्धारण, जनम सुधारण, शांति रो स्रोत बहावणो।।

१७. दीपै समवसरण में सतरवां तीर्थंकर, कुंथु प्रभुजी नाम सुहावणो।
ओ तो है जगतारण, कष्ट निवारण, हित मारग दरसावणो।।

१८. बन्दू बे कर जोड़ी अठारवां तीर्थंकर, अर जिन नाम सुहावणो।

ओ तो है सुखदायक, शांति प्रदायक, ज्ञान सुजोत जगावणो।।

१६. दीपै समवसरण में उन्नीसवां तीर्थंकर, मल्ली सुनाम सुहावणो।
ज्यांरो धिन–धिन जीतब नाम उजागर, जननी रो सुजश दीपावणो।।

२०. बन्दू बे कर जोड़ी नै बीसवां तीर्थंकर, मुनिसुव्रत नाम सुहावणो।
सुव्रत धारयां सूं सुधरै ओ जीवन, सुव्रत व्रत निपजावणो।।

२१. बन्दू बे कर जोड़ी इक्कीसवां जिनवर, नेम प्रभुजी नाम सुहावणो।
ज्यांरो सरणो सुखकरणो, भव जल तरणो, कष्ट जंजाल निवारणो।।

२२. दीपै समवसरण में बाइसवां जिनवर, अरिष्टनेमी नाम सुहावणो।
ज्यांरो सुखकर सरणो पातक हरणो, दुःख पीड़ा बिसरावणो।।

२३. बन्दू बे कर जोड़ी तेइसवां जिनवर, पार्श्व प्रभुजी नाम सुहावणो।
जिनजी रो नाम जप्यां सब कारज सरसी, सुख सांयत बरसावणो।।

२४. दीपै समवसरण में चौबीसमां तीर्थंकर, वीर जिनेश्वर नाम सुहावणो।
वर्धमान सदा सुख सम्पत होवै, नित उठ नाम चितारणो।।

२५. उभा मुळकै हंस बौले सगा रे सनेही,
ज्यां स्यूं दीपै ओ घर आंगणो।
बहुआं बेट्यां रिमझोला करती मधरी जी चालै,
ज्यां स्यूं चौबारां छायो चानणो।।

२६. लाडां कोडां परणीजै म्हारी कंवर लाडलड़ी,
मंगल हरख उच्छाव स्यूं,
जिनवर किरपा स्यूं कीरत दुगणी जी बधज्यो,
चिर जीवो म्हारो लाडो लाडली।।

रचना : श्रीमती कमला भादानी

३–पीलो

(धुन-पीलो रंगाद्यो)

आंख्या रो तारो, प्यारो हार हियारो,
हो धेनड़ जनम्यो राज दुलारो, कुल उजियारो हो-हरख बधाई।
हरख बधाई च्यारूँ कूंटां जो छाई,
हो थाली झणकारै सैर सुणाई हद गरणाई जी-हरख बधाई।।
१. पीलो औढावै वीरो हरख न मावै,
हो मिलजुल सहेल्यां मंगल गावै मोद मनावै हो–हरख बधाई।।
२. लाल वरण सिद्धां रो शाश्वत सुखदायी,
हो ओढे बड़भागण बीरोसा री बाई–हरख बधाई।
३. लूंठा श्रावक गीगै रा दादोसा बड़भागी,
हो गोदी ले हंस-हंस लाड लडावै, गीगै रा दादीसा-हरख बधाई।
४. समकित धर धेनड़ रा बाबोसा बड़भागी,
हो मेड़्यां चढ़ सोवन थाल बजावै गीगे रा बडियासा-हरख बधाई।
५. धरम रा धोरी गीगै रा काकोसा सौभागी,

हो गोदी ले घूंटियो पिलावै गीगै रा काकीसा—हरख बधाई।
६. गुरां रा अनुरागी भागी मोटा परसंगी,
हो जच्चा नै पीलो ओढावै गीगै रा मामोसा—हरख बधाई।
७. धीरा गम्भीरा गीगै रा फूंफोसा बड़भागी,
हो गोदी ले पूंचिया पैरावै गीगै रा भुआसा—हरख बधाई।
८. गुणधर ज्ञानी गीगै रा बीरोसा बड़भागी,
हो आरती सजावै निजर उतारै गीगै री बैनोल्यां—हरख बधाई।
६. जिनवर परताप कुल री कीरत बधज्यो,
हो बधज्यो दिन—दिन इधकी, पुन्याई सदा सवाई जी—हरख बधाई।

रचना : *श्रीमती कमला भादानी*

४—नामकरण (१)

(धुन-पाटलड़ै पग मेल सखीं . . .)

ऋषभ जिनन्द मोरां देवी माय, नाम लियां घर मंगल थाय।
आनन्दमुखी धन्य भाग सुखी होवैलो वंश सुनाम अखी।।

१. दादोसा रो प्यारो गीगो, बाबोसा रो थाल।
दादीसा बजावै आंगण सुवरण थाल।। आनन्दमुखीं . . .
२. बड़भागण जच्चा राणी, जायो लाडल पूत।
भरत सरीखो गीगो होवैलो सपूत।। आनन्दमुखीं . . .
३. अरिहन्त नाम, वरण ज्यांरो श्वेत।
हेतालु गीगो सब स्यूं पावैलो हेत।। आनन्दमुखीं . . .
४. सिद्धां री शरण, होसी सिद्ध काम।
ऊंचो सदा कुल रो राखैलो नाम ।। आनन्दमुखीं . . .
५. आचारज चरणां में, घणो विश्वास।
राखैलो गीगो, बधसी सुजस उजास।। आनन्दमुखीं . . .
६. साधु सम्मान, सुव्रत निपजाय।
रेवैली निरोगी, म्हारै गीगै री काय।। आनन्दमुखीं . . .
७. धरम री जोत, अमर ज्यांरी बेल।
चिरजीवो गीगो म्हारो सदा हंस खेल।। आनन्दमुखीं . . .

रचना : *श्रीमती कमला भादानी*

५—नामकरण (२)

(धुन-यशोमति मैया से. . .)

नामकरण की बेला मन को सुहाए।
धरती का कण-कण अभिनव सौरभ लुटाए।।

१. उदित हुआ यह चन्दा, है छवि प्यारी
किलकारियों से चहकी आंगन की क्यारी
बसंती बहार मधुवन बन मुस्काये, सुषमा फैलाए।।

२. प्रमुदितमना हो भूआ आरती सजाती
मंगल तिलक लगा मन में हर्षाती
मधुर बधावा गाकर, शिशु को बधाये, देती दुआएं।।

३. मां मन हिलोरा खाये, पाया यह मोती
चरण टिके ना धरती, निहारे यह ज्योति
सौम्य शिशु को पा निज भाग्य सराए, खुशियां मनाए।।

४. वट वक्ष छांव तले लू पलता ही जाये
प्रगति में अंक दहाई जुड़ता ही जाये
चीर बाधाओं को तू, बढ़ता ही जाये, मंजिल पाये।।

५. जग में चमकना जैसे नभ में ध्रुव्र तारा
छोटे बड़े क्या? सबका बनना सहारा
तेरा कर्तत्व कुल पे, कलश चढ़ाये, गरिमा बढ़ाए।।

रचना : श्रीमती पुष्पा दूगड़

६–नामकरण (३)

(धुन-अफसाना लिख रही हूं . . .)

आई है स्वर्णिम घड़ियां लाई बहार है।
शिशु जन्म हुआ है जब से खुशियां अपार है।।

१. धन्य हुई है जननी, पा शिशु मुस्कान है।
पाकर कुल प्रांगण दीपक, छाई बहार है।।
शिशु जन्म . . .

२. घर के कोने–कोने में, फैला प्रकाश है।
मानो अम्बर से उतरा, सूरज साकार है।।
शिशु जन्म . . .

३. सखियां मंगल गीतों से, शिशु को बधाती है।
खुशियों का दशों दिशाएँ करती प्रचार है।
शिशु जन्में . . .

४. वर्धमान ज्यों, वद्धि हो, शिशु के जीवन में।
सच्चे गुरु, देव, धर्म ही, जीवन आधार है।।
शिशु जन्में . . .

रचना : श्रीमती पुष्पा दूगड़

७–बधाओ

(धुन-चूरू री चरचों)

जुग–जुग जीओ ओ सुजाण थारो बधज्यो घणो सुनाम।
रहज्यो वरधमान कीरत संपत सुख मंगल आठूं याम।।

१. धन्ना शालिभद्र सी रिद्धि–सिद्धि रो भण्डार।
कयवन्ना सो भाग फलीज्यो, होयज्यो जय जयकार।।
जुग–जुगें`` . . . .

२. वीर प्रभु सो ज्ञान तेज, गौतम गणधर सो ध्यान।
अभयकुमार सरीखी निरमल बुद्धि वरो मतिमान।।
जुग–जुगें`` . . . .

३. बाहुबल सी शक्ति होयज्यो, रहो निरोगी काय।
भरत सरीखी अनासक्ति, संतोष सदा मन मांय।।
जुग–जुगें`` . . . .

४. सेठ सुदर्शन जिसड़ो ऊजल शील सुजस चमकाय।
माता मोरांदे ज्यूं सुख में, रसो बसो हरषाय।।
जुग–जुगें`` . . . .

रचना : श्रीमती कमला भादानी

८–बीरो

(धुन-कलाली . . .)

१. नूंतो झेलो घणैरे मान सनमान स्यूं, बीरोसा
कोइ आयज्यो थे म्हारै सिमरथ भातवी जी राज–कोइें . . .
२. थे छो म्हारा जामण जाया वीर घणां सनेही
कोइ थारै आयां स्यू हरख बधावणा जी राज–कोइें . . .
३. जिण दिन आस्यो आँगणियै में आप हो बीरोसा,
कोइ घणी रे हरखैली थांरी बैनड़ी जी राज–कोइें . . .
४. नेह संजोयो, राखड़ली रो तार ओ बीरोसा
नहिं इणस्यू बढ बंधण जग में दूसरो जी राज–कोइें . . .
५. है सिर मांथे थांरोड़ी मनवार, जामण जाई

कोइ आंवला थांरै सिमरथ भातवी जी राज–कोइें . . .
६. भाणेजी म्हारै कालजिये री कोर, जामण जाई
कोइ म्हारै धीवड़ स्यूं पैलां भाणजी जी राज–कोइें . . .
७. भाणेजी म्हारै है नैणा री जोत, जामण जाई
कोइ म्हारै छावां स्यूं पैलां भाणजी जी राज–कोइें . . .
८. किणविध टालां थांरोड़ी मनवार, जामण जाई
कोइ सांकल स्यूं सबली थांरी राखड़ली जी राज–कोइें . . .
९. सांकल बाई नहाखां तोड़ मरोड़, पण रेशम री
अै घुलियोड़ी गांठा म्हासूं ना खुलै जी राज–कोइें . . .
१०. जुग–जुग जीवो म्हारा सिमरथ वीर, भंवर भतीजा
कोइ थारै सुख स्यूं म्हारो हिवड़ो हर्‌यो जी राज–कोईं . . .
११. देव जिनेश्वर श्री जिनधर्म प्रताप ओ बीरोसा
कोइ कीरत तो होयज्यो इधकी उजली जी राज–कोइें . . .

***रचना :** श्रीमती कमला भादानी*

९–नेगचार

(धुन-म्हारै रे पिछोकड़ बायो रे कसुम्बों . . .)

१. अब म्हारी लाडली पंवरी औढे, पंवरी घणी सुरंगी रे, आनन्दा।
लाल वरण सिद्धां रो सोहे, है शाश्वत सुखदायी रे, आनन्दा।।

२. अब म्हारी लाडली चुड़लो पैरे, चुड़लो है घणमोलो रे, आनन्दा।
श्वेत वरण अरिहन्त सुहावै, अविचल सुख दातारी रे, आनन्दा।।

३. अब म्हारी लाडली मोड़ बंधावे, मोड़ सूरज ज्यूं झलकै रे, आनन्दा।
पीतवरण आचारज ओपै, गुरु किरपा सुख बरतै रे, आनन्दा।।

४ अब म्हारी लाडली हाथ रचावे, मेहन्दी रंग सुरंगी रे, आनन्दा।
हर्‌यो वरण है उपाध्याय रो, हर्‌यो भर्‌यो नित रहसी रे, आनन्दा।।

५. अब म्हारी लाडली केश गुंथावै, बिच सिन्दूर लगावै रे, आनन्दा।
नील वरण है पंचम पद रो सुख दिन रात सवायो रे, आनन्दा।

***रचना :** श्रीमती कमला भादानी*

१०–समठूणी

(धुन-पणिहारी जी ए लोऐं . . .)

आओ पधारो म्हारै आंगणै ओ समधी! चतुर सुजाण।
थे छो मोटा गुणखान थासूं दीपै ओ म्हारो आंगणो मेहमान।।

१. बड़ै रे भागां सू आवै पावणा हो छायो हरख उच्छाव।
आज खुशी रो नहीं पार जी मेहमान।। आओ पधारों . . .

२. किण विध करां म्हे स्वागत राज रो हो थे छो लूंठा गुण खान।
किण विध जतावां आभार जी मेहमान।। आओ पधारों . . .

३. म्हारै कुल री लाडेसर आज सूं ओ समधी थांरै कुल री आब।
थांरो लाडेसर म्हारो च्यानणो मेहमान।। आओ पधारों . . .

४. ऊंडी जड़ घुलज्यो गहरो रंग दोनूं कुल रो सम्पत सुख विस्तार।
बधज्यो सवायो गाढो हेत जी मेहमान।। आओ पधारों . . .

५. सगा रे सनेही भेला हुआ जी हिलमिल करै बतलाव।
मुळक करै है मनुहार जी मेहमान।। आओ पधारों . . .

६. भूल कमी जो कोई रही हो दीजो माफी बगसाय।
दिल थांरो ऊंडो दरियाव जी मेहमान।। आओ पधारों . . .

७. याद आवैली थांरी लायकी जी अपणायत रो बरताव।
मिश्री सो मीठो व्यवहार जी मेहमान।। आओ पधारों . . .

रचना : *श्रीमती कमला भादानी*

११–तोरण

(धुन-सैंतीस बरस लग . . .)

गाजै बाजै स्यूं आयो परणीजण रायवर लाडलो।
आनन्द हरख स्यूं आयो परणीजण रायवर लाडलो।।

१. निरख परख सासूजी हरखै सखियां मंगल गावै,
सूरज सो दीपै उणिहारो सगलो सैर सरावै जी।
आनन्दें . . .

२. गल मोत्यां रो हार सीस पर सिरेपाव लाखीणो,
जरी शेरवानी तन शोभे फूल गुलाबी झीणो जी।।
आनन्दें . . .

३. स्वजन बराती संगी साथी सगला हरख्या आवै।
स्वागत में बाइ रा दादोसा हिलमिल घणा बधावैजी।।
आनन्दें . . .

४. हाथां में मंगल थाली सोभागण सासूजी आया।

घणै चाव स्यूं भाल तिलक कर मन मांही हरसायाजी।।

आनन्दें . . .

५. जिसो सुर्दशन है वर राजा बिसी लाडेसर म्हारी।
सुखी रहो आ जोड़ी अविचल घणी घणी बलिहारी जी।।

आनन्दें . . .

रचना : श्रीमती कमला भादानी

१२–सीख (१)

(धुन-सजमल भोली . . .)

लाडां कोडां देवै दादीसा सीख ए हां ए कंवर लाडेसर।
सुण अनमोली सीखड़ली, दादोसा री आदरो।।

१. ब्राह्मी सिरखो होयज्यो थांरो ज्ञान ए, हां ए कंवर लाडेसर।
चंदनबाला सो धीरज म्हारी लाडली धारज्यो।। लार्डो . . .

२. सीता सी निरमलता उजल, शील ए हां ए कंवर लाडेसर।
दमयन्ती सो साहस, निर्भयता थे वरो।। लार्डो . . .

३. रत्नकुक्षि कौशल्या जिसड़ो नेह ए, हां ए कंवर लाडेसर।
कुन्ती जिसड़ी समता ममता थे राखज्यो।। लार्डो . . .

४. क्षमा द्रोपदी सी, राजुल सी धार ए, हां ए कंवर लाडेसर।
सुभद्रा सी दढधर्मी आस्था धारज्यो।। लाडां . . .

५. सुलसा सी समकित में दढ़ता धार ए, हां ए कवंर लाडेसर।
मगावती सो थांरो होयज्यो साहस, वीरता।। लाडां. . .

६. शिवा अंजना सो पति चरणां प्रेम ए, हां ए कवंर लाडेसर।
पद्मा प्रभावती सी होयज्यो तप में शूरता ।। लाडां. . .

७. पुष्पचूला सो पावन मन तन रूप हो, सुन्दरी सी सुन्दरता।
विनयवती गुण फूलां री सौरभ बांटज्यो।। लाडां. . .

रचना : श्रीमती कमला भादानी

१३–सीख (२)

(धुन-मेरा प्यार वो है कि. . .)

खुशी की घड़ी में खुशी रा फुंहारा,
आज आंगणियै में हरख न मावै।
लाड कोड चित्त चाव री बेला,

आनन्द उच्छाव मनड़ो लुभावै।।

सगा रै सम्बन्धी भेला हुआ है गीत बधावा रंग नया है,
बाई म्हारी (लाडली) रो परिणय उत्सव, सगलां रा हर्षित आज हिया है।
जैन प्रणाली सूं मंगल भावां, धरम प्रसाद सूं आनन्द थावै।।
खुशी कीं . . .

दादोसा री लाडल लाल लाडेसर मासा बापूसा री कंवर दुलारी,
काकोसा रै बागां री सोन चिड़कली, मन भावण काकीसा री प्यारी।
मोत्यां बिच लाल म्हारी सोनल रूपल, बाई ससुराल सिधावै।।
खुशी कीं . . .

पूज्य जनां रो आदर, मान्या थे कहणो, हेत भाव स्यूं मिलजुल रहणो,
सद्संस्कारां रै मारग बहणो, सद्गुण ही जीवन रो गहणो।
फूल ज्यूं हंसता खिलता ही रहज्यो, आज सहेल्यां थांनै सीख सुणावै।।
खुशी की. . .

रचना : *श्रीमती कमला भादानी*

१४–विदाई (१)

(धुन-सुपनो. . .)

१. हरख पधारो लाडल सासरै, दादोसा रै नैणां री कौर,
दादीसा थांनै सीख सुणावै हो राज।
म्हारै ए कुल री च्यानणी, समधी रै कुल री जोत,
उजालो दिन–दिन इधको दिपाया हो राज।।

२. हरख पधारो लाडल सासरै, बापूसा रै हिवड़ै री हार,
माजीसा थानै सीख सुणावै हो राज।
सुख सूं बसो ए म्हारी लाडली, दुगुणो बधज्यो थांरो मान,
दोनूं ही कुल रो सुजश बढ़ाया हो राज।।

३. हरख पधारो लाडल सासरै, काकोसा रै कालजै री कौर,
काकीसा थानै सीख सुणावै हो राज।
जितरा रह्या थे मन भावता, तिणस्यूं सवाया बाल्हा होय,
मिलजुल हंसता खिलता सुहावो हो राज।।

४. हरख पधारो लाडल सासरै, बाई म्हारी मोत्यां बिचली लाल,
वीरोसा थानै सीख सुणावै हो राज।
हंसता पधारो बाई थे घरां, जद भी करोला म्हानै याद,
दौड़्या तो थास्यूं आय मिलालां हो राज।।

रचना : *श्रीमती कमला भादानी*

१५–विदाई (२)

(धुन-इन हवाओं में इन फिजाओं में. . .)

मधुर दिवस अरु मधुर लग्न है, मधुर उमंगों की हैं घड़ियां।
फिर भी क्यों ये उमड़ रही है आँखों से मोती की लड़ियाँ।।
मधुर दिवस. . .

1. *काढ कर देते कलेजा 'समधीवर' हम आपको यह,*
नेह ऐसा आपका हो भूल जाए बाप को यह।
अन्नपूर्णा, भाग्यलक्ष्मी, जा के भर देगी ये खुशियां।।

२. *खुश रहो बेटी सदा, सौरभ बिखेरो फूल बनकर।*
हो पति–सेवा निमग्ना, प्रिय चरण की धूल बनकर।
'राजुल' का तुम रूप बनो, विकसित होवे आध्यात्मिक कलियां।।

३. *याद करो इतिहास के पन्ने, याद करो क्षत्राणी को,*
सीता वो सावित्री, चन्दनबाला, हाडा राणी को।
देव, गुरु अरु धर्म शरण में हर क्षण बीते जीवन घड़ियां।।

४. *पति होंगे भगवान, बने ससुराल तुम्हारा स्वर्ग भवन,*
पिता बनेंगे स्वसुर, सास होगी माता, प्रिय ननद बहन।
अपने कार्यकलापों से शोभित करना है आंगन–गलियां।।

५. *जाओ सदा सुहागिन हो, दोनों की जोड़ी बनी रहे,*
मंगलमय हो जीवन तेरा, 'हंस' अखण्ड सुहाग रहे।
मर्यादामय जीवन होवे, याद करेगी सारी दुनिया।।

रचना : *श्री हंसराज गंग (प्रतापगंज)*

१६–स्वागत (१)

(धुन-प्यासे पंछी नील गगन. . .)

लिए हाथ में स्वर्णिम थाली, करते स्वागत सारे
आरती आज उतारें।।

1. *सरगम की स्वर लहरी मधुरिम–मधुरिम तान सुनाए*
मंगल कलश सजे हैं, सखियां रेशम चंवर ढुलाए
पावन घड़ियां, पावन बेला उछले हर्ष फव्वारे
आरती आज उतारें।।

२. *अक्षत, चन्दन, केशर लेकर मंगल तिलक लगाएं*

शुभ भावों का दीप जलाकर आओ तुम्हें बधाएं
आज हमारे इस आंगन में आई नई बहारें
आरती आज उतारें।।

३. *जीवन प्रांगण में अनुपम यह कल्पलता लहराई*
वर्ष अनेकों बीते तब कहीं लक्ष्मी घर पर आई
आज आपके हाथ सौंपते हर्षित है हम सारे
आरती आज उतारें।।

४. *नई प्रेरणा नई दिशा पा निज मंजिल को पाओ*
नए–नए आयामों से जीवन को सरस बनाओ
नए दिवस का नया सूर्य लाए प्रगति मनुहारें
आरती आज उतारें।।

***रचना :** श्रीमती पुष्पा दूगड़*

१७–स्वागत (२)

(धुन-एक प्यार का नगमा है. . .)

मन मुदित हमारे हैं, पुलकित हम सारे हैं।
धन्य हुआ यह आंगन जब आप पधारे हैं।।

१. *उपवन यह विकसाया, हर बूंटा लहराया*
खिल गई क्यारी–क्यारी, मन सुमन है सरसाया
बगिया गुलजार बनी, पा सरस फुहारे हैं– धन्य हुआ . . .

२. *है शुभ बेला आई, दिल में पुलकन छाई*
स्वागत करने को आज, गूंजे यश शहनाई
मन सागर में उठती, आनन्द बहारे हैं–धन्य हुआ . . .

३. *देखा सपना आला, छाए वन हरियाला*
कन्या की जीवन में, आए दिन अलबेला
अब सफल हुए सारे, अरमां ये प्यारे हैं– धन्य हुआ . . .

४. *है त्रिभुवन के तारक, श्री वीतराग भगवन*
शुभ अवसर पर करते, मिलजुल हम अभिवन्दन
उन पावन चरणों में, शत नमन हमारे हैं–धन्य हुआ . . .

५. *है सत्य धर्म प्यारा, जीवन का उजियारा*
वर–वधु के जीवन में, संचरित हो यह धारा
पाये मंजिल प्यारी, बस यही इशारे हैं– धन्य हुआ . . .

***रचना :** श्रीमती पुष्पा दूगड़*

१८–बत्तीसी

(धुन-कुरजां ए म्हारो भंवर मिला दें . . .)

मैया थारी भाणजी परणै ओ।।

१. मत सोचो भैया भाणजी।
रही छोटी कहे बहन।
भैया थारी भाणजीं . . .
झट आज्यो भैया ब्याव में।
जोवैला सब थारी बाट।।
भैया थारी भाणजी . . .

२. आप ब्याही मनै ठाठ स्यूं।
अब करो भाणजी रा लाड।
भैया थारी भाणजीं . . .
नहीं चावै धन माल अब।
चावै निःस्वारथ प्रेम।
भैया थारी भाणजीं . . .

३. सहयोग करो बहनोई रो।
हो कष्ण, अर्जुन जितो स्नेह।।
भैया थारी भाणजीं . . .
अब है समय विवाह रो।
करो आमंत्रण स्वीकार।।
भैया थारी भाणजीं . . .

रचना : *श्री पारस जैन (हुबली)*

१६–उद्बोधन

(धुन-जवाहरलाल बनेंगे हम . . .)

नया जीवन बनाना है।
अपने परिवारों के गौरव को बढ़ाना है।।
नया जीवन बनाना है

१. *जिस आदर्श ढंग से तुम, दुनिया के सम्मुख आए,*
वे आदर्श तुम्हारे जीवन में समरस हो जाए।
देखे जन–जन ऐसा वातावरण बनाना है।।
नया जीवन बनाना है . .

२. *विनय, नम्रता और मधुर – व्यवहार सभी को भाता,*
आगन्तुक पर बिना किए ही जादू सा हो जाता।
हर क्षण अपनी वाणी से अमरित बरसाना है।।
नया जीवन बनाना है . .

३. *सदा सादगी रखना, देखा देखी कभी न करना,*
सोच समझ कर कदम उठाना गलत काम से डरना।
घर के हर सदस्य के मन में स्थान पाना है।।
नया जीवन बनाना है . .

४. *अच्छे–अच्छे संस्कारों से संस्कारित होना है,*
आस–पास में 'मधुकर' सुन्दर बीजों को बोना है।
अपने घर को शिक्षा–सुमनों से सजाना है।।
नया जीवन बनाना है . .

***रचना :** शासन गौरव–मुनिश्री मधुकर*

४

(आचार्य भद्रबाहु स्वामी द्वारा विरचित)

१. ***उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ।***
विसहर - विसनिन्नासं, मंगल - कल्लाण - आवासं।।

शासन पर होने वाले उपसर्गों को दूर करने वाला देवता जिनके चरणों में सेवक है, कर्म-रूप सघन बादलों से जो मुक्त हैं, महाविषधर भुजंग का विष जिनके नाम से दूर होता है, मंगल और कल्याण के घर हैं, उन पार्श्व प्रभु को नमस्कार करता हूँ।

२. ***विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।***
तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं।।

विषधर के विष को दूर करने वाला भगवान पार्श्वदेव का नाम जो मनुष्य कंठस्थ रखता है, उसके दुष्टग्रह, भीषण रोग, कालज्वर आदि सभी उपद्रव पूर्णरूपेण शांत हो जाते हैं।

३. ***चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ।***
नर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोहग्गं।।

प्रभो! तुम्हारे नाम के मन्त्र का चमत्कार तो दूर, तुम्हें केवल नमस्कार करने मात्र से ही अपार फल प्राप्त होता है। अतः मनुष्य, तिर्यंच आदि गतियों में भी तुम्हारे उन भक्तों को दुःख–दौर्भाग्य के कष्ट नहीं सता सकते।

४. ***तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि-कप्पपायवब्भहिए ।***
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं।।

प्रभो! चिन्तामणिरत्न और कल्पवक्ष से भी अधिक महिमाशाली (सम्यक्त्व) श्रद्धा प्राप्त हो जाने पर साधकों को किसी भी प्रकार का भय नहीं रहता। ऐसे श्रद्धालु बिना किसी विघ्न–बाधा के अजरामर मोक्ष-धाम को प्राप्त कर लेते हैं।

५. ***ॐ अमरतरु-कामधेणु, चिंतामणि-कामकुम्भमाईए ।***

सिरी पासनाह-सेवा-गयाण सव्वे वि दासत्तं।।

ॐ – यह नमस्कार मन्त्र का बीज मन्त्र है, ऐसा समझना चाहिए। कल्प-वक्ष, कामधेनु, चिन्तामणि रत्न और काम-कुम्भ आदि ये सभी वस्तुएं पार्श्वनाथ भगवान की सेवा करने वाले का दासत्व स्वीकार करती हैं।

६. **ॐ ह्रीं श्रीं ऐं ॐ तुह दंसणेण सामिय, पणासेइ रोग-सोग-दोहग्गं।**
कल्पतरुमिव जायइ, ॐ तुह, दंसणेण समफल हेउ स्वाहा।।

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं स्वामिन्! तुम्हारे दर्शन से मनुष्य के रोग, शोक और दुर्भाग्य नष्ट हो जाते हैं। प्रभो! तुम्हारे दर्शन से कल्प–वक्ष की ज्यों व्यक्ति की सभी कामनाएं पूर्ण होती हैं।

७. **ॐ ह्रीं नमिऊण पणवसहियं, मायाबीएण धरणनागिंद।**
सिरीकामरायकलियं, पास जिणंदं नमंसामि।।

ॐ ह्रीं इस बीज मन्त्र को नमस्कार कर ॐ सहित श्री कामराज को परास्त करने वाले पार्श्व जिनेन्द्र को नमस्कार करता हूं।

८. **ॐ ह्रीं श्रीं पास विसहर-विज्जामंतेण झाणं झाएज्जा।**
धरणेन्द्र पउमादेवी, ॐ ह्रीं क्ष्मल्र्व्युं स्वाहा।।

ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्व-विषहर विद्यामंत्र के द्वारा ध्यान ध्याएं। धरणेन्द्र पद्मादेवी ॐ ह्रीं क्ष्मल्र्व्यूं स्वाहा – यहां बीज मन्त्र को नमस्कार किया गया है।

९. **ॐ थुणेमि पासं, ॐ ह्रीं पणमामि परम भत्तीए ।**
अट्ठक्खर धरणिंदो, पउमावई पयडिया कित्ती।।

ॐ पंचपरमेष्ठी के बीज मन्त्र सहित पार्श्व प्रभु को नमस्कार, ॐ ह्रीं बीज मन्त्र को परम भक्ति से प्रणाम करता हूँ, धरणेन्द्र पद्मावती के ये आठ अक्षर परिकीर्तित किये गये हैं।

१०. **ॐ नट्ठट्ठ-मयट्ठाणे, पणट्ठकम्मट्ठ-नट्ठ संसारे ।**
परमट्ठ-निट्ठियट्ठे, अट्ठगुणाधीसरं वन्दे।।

ॐ यह पंचपरमेष्ठी का बीज मन्त्र है, इस बीज मन्त्र के द्वारा अष्टमद-स्थान प्रणष्ट किये हैं, अष्ट कर्म प्रणष्ट किये हैं, संसार के भय-भ्रमणों को नष्ट किये हैं, ऐसे निश्चित परमार्थ तथा अष्टगुण अधीश्वर को नमस्कार करता हूँ।

११. ***इय संथुओ महायस! भत्तिब्भर निब्भरेण हियएण ।***
ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद।।

हे महायशस्वी! इस प्रकार भक्ति-भावना से परिपूर्ण हृदय से मैंने यह तुम्हारी स्तुति की है, अतएव जब तक मोक्ष प्राप्त न हो, तब तक भव-भव में मुझे सम्यक्त्व प्रदान करते रहें।

(धुन-आरती)

जय महावीर भगवान
मन मन्दिर में आओ धरूँ निरन्तर ध्यान

१. पावन नाम तुम्हारा, मन्त्राक्षर प्यारा।..प्रभु...
मेरी स्वर-लहरी पर, उठे एक ही तान।।

जय महावीर भगवान...

२. राग द्वेष विजेता, सिद्धि-सदन नेता।..प्रभु...
क्षमामूर्ति जग त्राता, मिटे सकल व्यवधान।।

जय महावीर भगवान...

३. अनेकांत उद्‌गाता, अनुपम सुखदाता।..प्रभु...
जनम-जनम के बन्धन, तोड़े कर संधान।।

जय महावीर भगवान...

४. आधि व्याधि की माया, मिटे प्रेत छाया।..प्रभु...
आत्म-शक्ति जग जाए, लघु भी बने महान।।

जय महावीर भगवान...

५. भक्ति भरा मन मेरा, तोड़ रहा घेरा।..प्रभु...
तन्मय बनकर 'तुलसी' करूँ सदा संगान।।

जय महावीर भगवान...

(धुन : धरा पर उतरा स्वर्ग विमान)

धरें हम तन्मय होकर ध्यान रे, जग भान रे,
जय महावीर भगवान
मिटाएं तव-मम का व्यवधान रे, जग भान रे
जय ज्ञातपुत्र भगवान।।ध्रुव।।

१. त्रिशला मां के राज दुलारे, नप सिद्धार्थ-वंश उजियारे।
क्षत्रियकुण्ड ग्राम में जनमे, प्रभुवर पुण्य-निधान रे।।

जग भान रे, जय महावीर भगवान

२. चारों ओर हर्ष घन छाए, खुशी मनाए दशों दिशाएँ।
बढ़ी सम्पदा घर, परिकर में, वर्धमान अभिधान रे।।

जग भान रे, जय महावीर भगवान

३. ज्ञान, पराक्रम, अभय भाव से, महावीर बन निज प्रभाव से।

बाल्यकाल वैराग्यवत्ति वर, सहज प्राप्त सम्मान रे।।

जग भान रे, जय महावीर भगवान

४. तीस वर्ष वय, भर यौवन में, पंचमुष्टि लुंचन उपवन में।
सामायिक संयम स्वीकारा, एकाकी प्रस्थान रे।।

जग भान रे, जय महावीर भगवान

५. क्रूर 'चण्डकौशिक' ने काटा, सुनकर छा जाता सन्नाटा।
करुणाभरी दष्टि से प्रभु ने, उसे दिया वरदान रे।।

जग भान रे, जय महावीर भगवान

६. काली करतूतें 'संगम' की, बीस बार मरणान्तक धमकी।
बाल नहीं बांका कर पाई, शान्त हुआ तूफान रे।।

जग भान रे, जय महावीर भगवान

७. दुरवस्था में फंसी बिचारी, चंदनबाला राजकुमारी।
बंधन टूटे दर्शन पाकर, मुख पर मदु मुस्कान रे।।

जग भान रे, जय महावीर भगवान

८. आत्मा अजर-अमर अविनश्वर-क्षणभंगुर यह काया नश्वर।
ध्यान, मौन-युत करते प्रतिपल, अन्तर अनुसन्धान रे।।

जग भान रे, जय महावीर भगवान

९. जन संकुल गिरि, गह्वर जंगल, चरण-चरण में प्रतिपल मंगल।
अपनी गति से चली साधना, क्या सुनसान श्मसान रे।।

जग भान रे, जय महावीर भगवान

१०. रोमांचक-तप दिल दहलाता, मानो तन से तोड़ा नाता।
कर्म कटक को छिन्न-भिन्न कर, पाया केवल ज्ञान रे।।

जग भान रे, जय महावीर भगवान

११. अनेकांत का पथ दिखलाया, अपरिग्रह का पाठ पढ़ाया।
जन-जन के मानस में फूंका, मैत्री मंत्र महान रे।।

जग भान रे, जय महावीर भगवान

१२. इन्द्रभूति से विज्ञ, विलक्षण, समाधान पा, संभले तत्क्षण।
शिष्य सैकड़ों सह दीक्षित बन, गणधर प्रथम प्रधान रे।।

जग भान रे, जय महावीर भगवान

१३. धर्म तीर्थ का संस्थापन कर, कहलाये जिनवर तीर्थंकर।
आत्मा बन जाए परमात्मा, सहज सरल सुविधान रे।।

जग भान रे, जय महावीर भगवान

१४. जातिवाद जजीरें तोड़ी, दिशा क्रियाकांडों की मोड़ी।
संयम की सविवेक साधना, चला सबल अभियान रे।।

जग भान रे, जय महावीर भगवान

१५. बंद हुई हिंसा की होली, रुकी दास क्रय-विक्रय बोली।
उथल पुथल सी मची, श्रवण कर ओजस्वी व्याख्यान रे।।

जग भान रे, जय महावीर भगवान

१६. साध्वीप्रमुखा बनी चन्दना, अभिनव पैदा हुई स्पंदना।
नारी जागति का स्वर फैला, सफल हुए अरमान रे।।

जग भान रे, जय महावीर भगवान

१७. पावापुर में अन्तिम पावस, आई कार्तिक कष्णामावस।
दो प्रतिबोध देव को गौतम ! भेजा कर आह्वान रे।।

जग भान रे, जय महावीर भगवान

१८. कर्मवाद पर अन्तिम प्रवचन, चौविहार बेला पद्मासन।
कर्म-श्रंखला तोड़ी सहसा, पाए परिनिर्वाण रे।।

जग भान रे, जय महावीर भगवान

१६. ज्योतिपुंज उठ गया जगत से, सारे मानव मर्माहत से।
एक-दूसरे का मुख देखे, मानो बंद जबान रे।।

जग भान रे, जय महावीर भगवान

२०. जग में हुआ घोर अन्धियारा, रत्न प्रदीपों का उजियारा
जगमगता यह ज्योति-पर्व करता सन्देश प्रदान रे।।

जग भान रे, जय महावीर भगवान

२१. महावीर का शासन पाया, तेरापंथ उसी की छाया।
दीपमालिका दिन तेतीसे, 'तुलसी' मंगल गान रे।।

जग भान रे, जय महावीर भगवान

५

१. राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार।
मरना सबको एक दिन, अपनी-अपनी वार।।

२. दल-बल देवी देवता, मात-पिता परिवार।
मरती बिरियाँ जीव को, कोई न राखण हार।।

३. दाम बिना निर्धन दुखी, तष्णा-वश धनवान।
कहुं न सुख-संसार में, सब जग देख्यो छान।।

४. आप अकेलो अवतरे, मरे अकेलो होय।
यों कबहूं या जीव को, साथी सगो न कोय।।

५. जहां देह अपनी नहीं, तहां न अपना कोय।
घर-संपत्ति पर प्रकट ये, पर है परिजन लोय।।

६. दीपै चाम चादर मढ़ी, हाड पींजरा देह।
भीतर या सम जगत में, और नहीं घिन-गेह।।

७. जग-वासी घूमे सदा, मोह नींद के जोर।
सब लूटे नहीं दीसता, कर्म चोर चहुं ओर।।

८. मोह नींद जब उपशमे, सतगुरु देय जगाय।
कर्मचोर आवत रुके, तब कुछ बने उपाय।।

९. ज्ञान-दीप-तप-तेल भर, घर शोधे भ्रम छोर।
या विधि बिन निकसे नहीं, पैठे पूरब चोर।।

१०. पंच महाव्रत संचरण, समिति पंच प्रकार।
प्रबल पंच इन्द्रिय विजय, धार निर्जरा सार।।

११. चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष-संठान।
तामें जीव अनादि तें, भरमत है बिन ज्ञान।

१२. धन जन कंचन राज सुख, सबहि सुलभ कर जान।
दुर्लभ है संसार में, एक यथारथ ज्ञान।

१३. जाचे सुरतरु देय सुख, चिन्तित चिन्ता रैन।
बिन जाचे बिन चिन्तिये, धर्म सदा सुख दैन।।

आऊखे री घड़ियां थांरी घटती ही ज्यावै हो,
करलै कमाई धर्म ध्यान री।
समय जो बीत ज्यावै पाछो नहीं आवै हो,
ज्योति जगालै अन्तर ज्ञान री।।

१. सांस रे धागां स्यूं बण्यो जिन्दगी रो हार हो
टूटण में लागै नहीं देर हो ।
मन मोहक तस्वीर थांरै तन री हो,
बणसी आखिर माटी रो ढेर हो।।

२. आर्त्त रौद्र ध्यान रो मिटाले अंधारो हो,
चाँद उगाले समता भाव रो ।
करयोड़ा कर्मां रो फल भोगणो ही पड़सी हो,
करलै उजाळो मंगल भाव रो।।

३. एकलो ही आयो है तूं एकलो ही जासी हो,
साथ न जासी एक तार हो ।
मोह री मदिरा नै पी बण्यो क्यूं तू बावलो,
पापां रो बांधे सिर क्यूं भार हो।।

४. आतमा री चादर नै ऊजली बणाले हो,
संयम री साबण लेकर हाथ में ।
धुंओं राग-द्वेष रो उड़ै है च्यारूं ओर हो,
रहजै सावधान दिन रात में।।

५. धर्म रे मारग में बढ़तो ही रहजे हो,
मन में तूं रखजै निर्मल भावना ।
मुनि 'राकेश' बेड़यां टूटयां कर्मां री हो,
होसी सफल थांरी कामना।।

आऊखे री घड़ियां थांरी घटती ही ज्यावै हो,
करलै कमाई धर्म ध्यान री।
समय जो बीत ज्यावै पाछो नहीं आवै हो,
ज्योति जगालै अन्तर ज्ञान री।।

१. सांस रे धागां स्यूं बण्यो जिन्दगी रो हार हो
टूटण में लागै नहीं देर हो ।
मन मोहक तस्वीर थांरै तन री हो,
बणसी आखिर माटी रो ढेर हो।।

२. आर्त्त रौद्र ध्यान रो मिटाले अंधारो हो,
चाँद उगाले समता भाव रो ।
करयोड़ा कर्मां रो फल भोगणो ही पड़सी हो,
करलै उजाळो मंगल भाव रो।।

३. एकलो ही आयो है तूं एकलो ही जासी हो,
साथ न जासी एक तार हो ।
मोह री मदिरा नै पी बण्यो क्यूं तू बावलो,
पापां रो बांधे सिर क्यूं भार हो।।

४. *आतमा री चादर नै ऊजली बणाले हो,*
संयम री साबण लेकर हाथ में ।
धुंओं राग-द्वेष रो उड़ै है च्यारूं ओर हो,
रहजै सावधान दिन रात में।।

५. *धर्म रे मारग में बढ़तो ही रहजे हो,*
मन में तूं रखजै निर्मल भावना ।
मुनि 'राकेश' बेड़्यां टूटयां कर्मां री हो,
होसी सफल थांरी कामना।।

अर्हम्

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतम प्रभुः।
मंगलं स्थूलभद्राद्याः, जैनधर्मो स्तु मंगलम्।।

नामकरण-पत्रक

श्रीमान् ....

सुपुत्र .... निवासी ....

के प्रांगण में पुत्र/पुत्री जन्म

वीरनिर्वाण संवत् २० .... ई. दि. ....

विक्रम संवत् २० .... मास .... पक्ष ....

तिथि .... वार श्री ....

समय (दिवा/रात्रि) ....

नक्षत्र .... राशि ....

जन्म स्थान ....

नामकरण ....

वि. सं. २० .... को सम्पन्न हुआ।

दिनांक ....

स्थान ....

.. संस्कारक